जब घास ने ज़िन्दगी दी...

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Book Title : Jab Ghaas Ne Zindagi Di (When Grass Brought Life)
Cover Page picture : Grass
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

मार्च 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
जब घास ने ज़िन्दगी दी... 5
1 ग्वालिन रानी 7
2 शेरों की घास 18
3 सात पोशाकों वाली सुन्दरी 36
4 कप्तान और जनरल 52
5 दो खच्चर हॉकने वाले 61
6 एक राजा और सेब 69
7 लकी चिड़िया 76

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **400** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
मई **2018**

जब घास ने ज़िन्दगी दी...

घास[1] शब्द ऐसा कोई बहुत ही ख़ास शब्द नहीं है जिसकी लोक कथाऐं ख़ास करके इकट्ठी की जायें पर यह भी आश्चर्य की बात है कि लोक कथाऐं इकट्ठी करते समय घास की कई कथाऐं पढ़ने में आयीं। यह देख कर कि ऐसी लोक कथाऐं मौजूद हैं उनको एक जगह इकट्ठा कर लिया गया। यह घास कोई ऐसी वैसी घास नहीं है। ये सब घासें ख़ास हैं जो मरे हुए लोगों में जान डाल देती हैं।

भारत में ऐसी घासों को हिन्दी में जड़ी बूटी कहा जाता है। इस मामले में हनुमान जी की संजीवनी बूटी तो सबसे ज़्यादा मशहूर है। पर यहॉ घास शब्द का इस्तेमाल इसलिये किया गया है क्योंकि अंग्रेजी की पुस्तकों में इसके लिये कहीं "हर्ब" और कहीं "ग्रास" शब्द का इस्तेमाल किया गया है इसलिये यह पता नहीं चलता कि कहॉ यह जड़ी बूटी है और कहॉ घास है। इन सब कथाओं में घासों ने लोगों को ज़िन्दा किया है।

घास की लोक कथाओं का यह संकलन भी तुम लोगों को लोक कथाओं के और संकलनों की तरह ही पसन्द आयेगा।

[1] Translated for the words "Herb" and "Grass"

1 ग्वालिन रानी[2]

घास की यह पहली लेक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप के इटली देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक राजा और रानी थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। एक बुढ़िया ने उनको बताया कि उनके या तो एक लड़का होगा जो घर छोड़ कर चला जायेगा और वे उसको कभी नहीं देख पायेंगे।

और या फिर वह एक बेटी ले लें जिसको वे अठारह साल की उम्र तक रख पायेंगे – वह भी जब जबकि वे उस पर ठीक से नजर रख पाये तो। राजा और रानी ने कहा कि वे बेटी से ही सन्तुष्ट थे।

समय आने पर उनके घर एक बेटी हुई। राजा ने उसके लिये जमीन के नीचे एक बहुत ही सुन्दर महल बनवाया और वह उसी में रहने, पलने और बढ़ने लगी। उस लड़की को इस बात का ज़रा भी पता नहीं था कि जमीन के ऊपर भी कुछ है।

जब वह अठारह साल की होने को आयी तो उसने अपनी आया से प्रार्थना की कि वह उस महल का दरवाजा खोल दे। हालॉकि आया ने उसको दरवाजा खोलने के लिये काफी मना किया

[2] The Milkmaid Queen (Story No 81) – a folktale from Legborn area, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

पर वह उससे जिद करती रही तो आखिर आया ने उसके लिये महल का दरवाजा खोल दिया।

लड़की दरवाजे से बाहर निकली तो अपने आपको एक बागीचे में पाया। सूरज देख कर उसको बहुत अच्छा लगा। उसने सूरज पहली बार देखा था। आसमान के बहुत सारे रंग पहली बार देखे थे। फूल और बड़े बड़े पंखों वाली चिड़ियें पहली बार देखी थीं कि वे कैसे नीचे उड़ उड़ कर आ रही थीं।

इतने में एक बड़े पंजे वाली चिड़िया आयी और उसको अपने पंजों में दबा कर उड़ा कर ले गयी। वह चिड़िया उड़ती गयी और उड़ती गयी और जा कर खेत मे बने एक मकान पर बैठ गयी।

उसने उस लड़की को उस घर की छत पर ले जा कर छोड़ दिया और उड़ गयी। उस समय दो किसान, एक पिता और एक उसका बेटा, उस खेत में काम कर रहे थे। उन्होंने देखा कि उनके मकान के ऊपर कोई चमकीली सी चीज़ बैठी है।

सो उन्होंने एक सीढ़ी उठायी और छत पर चढ़ गये। वहॉ पहुँच कर उन्होंने देखा कि वहॉ तो एक सुन्दर सी लड़की चमकीले हीरों का ताज पहने खड़ी है।

उस किसान का यही एक बेटा था जो उसके साथ काम कर रहा था और पॉच बेटियॉ थीं। उसकी पॉचों बेटियॉ ग्वालिनें थीं। उस किसान ने उस लड़की को अपनी उन पॉचों बेटियों के साथ ही रख लिया और सब साथ साथ ही रहने लगे।

वह किसान हर महीने उस लड़की के ताज का एक हीरा बेच देता और उससे आये पैसों से परिवार का खर्च चलाता था।

जब लड़की के ताज के सब हीरे बिक गये तो लड़की किसान की पत्नी से बोली — "मैं आप लोगों से दूर नहीं रहना चाहती मॉ। आप इस देश के राजा के पास जायें और उनसे कहें कि वह आपको कढ़ाई करने के लिये कुछ दे दें।"

सो किसान की पत्नी उस देश के राजा के पास गयी और कढ़ाई के लिये कुछ मॉगा तो रानी बोली — "तुम अपनी ग्वालिन बेटियों से यह उम्मीद कैसे रखती हो कि वह कुछ कढ़ाई कर लेंगी?"

फिर भी रानी ने चतुराई से कढ़ाई करने के लिये उसको एक कैनवैस[3] दे दिया। किसान की पत्नी उस कैनवैस को ले कर घर आ गयी और उस कैनवैस को उसने उस लड़की को दे दिया। लड़की ने उस कैनवैस पर इतनी सुन्दर कढ़ाई की कि उसको देख कर तो रानी की बोलती ही बन्द हो गयी।

रानी ने किसान की पत्नी को दो सोने के सिक्के और एक साफ करने वाला कपड़ा[4] दिया जो उस लड़की को काढ़ना था। कुछ दिन

[3] Translated for the word "Canvas" – canvas is a type of thick coarse cloth
[4] Translated for the word "Dusting cloth"

बाद किसान की पत्नी कढ़ाई किये गये सफाई करने वाले कपड़े को ले कर रानी के पास गयी तो रानी ने देखा कि वह कपड़ा तो बहुत ही सुन्दर कढ़ा हुआ था।

इस बार रानी ने उसको तीन सोने के सिक्के दिये और काढ़ने के लिये एक पुरानी फटी हुई स्कर्ट दे दी। जब वह स्कर्ट रानी को वापस दी गयी तो वह तो शाम को पहने जाने वाली पोशाक का ही एक हिस्सा लग रही थी।[5]

अबकी बार रानी से नहीं रहा गया। उसने उस किसान की पत्नी से पूछा — "तुम्हारी बेटी ने इतनी सुन्दर कढ़ाई करनी सीखी कहाँ?"

किसान की पत्नी ने जवाब दिया — "एक नन[6] ने उसे यह सब सिखाया था।"

रानी बोली — "हो सकता है पर फिर भी यह किसी देहातिन का काम नहीं है। खैर कोई बात नहीं। मैं चाहूँगी कि वह मेरे बेटे की शादी की सारी पोशाकों पर कढ़ाई करे।"

[5] It was looking so nice that it looked like a part of the eveniong dress. Evening dress is supposed to be a good dress in western world.

[6] A nun is a member of a religious community of women, living under vows of poverty, chastity, and obedience. She may have decided to dedicate her life to serving all other living beings, or she might be an ascetic who voluntarily chose to leave mainstream society and live her life in prayer and contemplation in a monastery or convent. The term "nun" or "Sister" is applicable to both Eastern and Western Catholics, Orthodox Christians, Anglicans, Lutherans, Jains, Buddhists, Taoists, Hindus and some other religious traditions. See a picture of nun above.

यह सुन कर कि एक ग्वालिन उसकी शादी की पोशाकें काढ़ रही थी राजकुमार ने उस ग्वालिन से मिलने और उसको कढ़ाई करते देखने की इच्छा प्रगट की।

वह एक शरारती नौजवान था सो उसकी यह इच्छा ज़ोर पकड़ गयी। एक दिन वह अचानक उसके घर पहुँच गया और उसने पीछे से जा कर उसको चूम लिया।

इस पर उस लड़की की कढ़ाई करने वाली सुई उस राजकुमार की छाती में चुभ गयी और दिल तक जा पहुँची जिससे वह मर गया।

यह देख कर लड़की तो सन्न रह गयी पर इसमें उसकी कोई गलती नहीं थी। उसको पकड़ कर राजा की अदालत में ले जाया गया। उस अदालत में राजा की चार लड़कियाँ जज के रूप में थीं।

राजा की सबसे बड़ी लड़की ने इस लड़की के लिये मौत की सजा सुनायी। दूसरी लड़की ने उसको ज़िन्दगी भर के लिये जेल में डालने की सजा दी। तीसरी लड़की ने उसको बीस साल जेल में रहने की सजा सुनायी।

पर चौथी लड़की जो राजा की सबसे छोटी लड़की थी और जो सबसे ज़्यादा दयालु थी समझ गयी कि यह मौत तो उसका भाई अपने लिये अपने आप ही ले कर आया था। उसको मारने में इस लड़की का कोई हाथ नहीं है।

उसने उस लड़की के लिये एक मीनार में आठ साल के लिये बन्द करने की सलाह दी। और साथ में उसने यह भी कहा कि राजकुमार का शरीर हमेशा उसके सामने रखा रहना चाहिये ताकि वह उसको देख देख कर पछताती रहे।

सबसे छोटी लड़की की बात मान ली गयी और उस ग्वालिन लड़की को एक मीनार में बन्द कर दिया गया। जब वह मीनार की तरफ ले जायी जा रही थी तो राजा की सबसे छोटी लड़की जिसने उसको यह सजा दी थी उसके कान में फुसफुसायी — "तुम डरना नहीं मैं तुम्हारे साथ हूँ।"

राजा की बेटी अपनी बात की सच्ची थी। वह उस ग्वालिन कैदी को खाने के लिये रोज शाही रसोई के बढ़िया बढ़िया पकवान भेजती रही।

जब उस ग्वालिन को मीनार में कैद हुए तीन साल हो गये तो मीनार के पास एक दिन फिर से वही बड़े पंखों वाली चिड़िया प्रगट हुई जो उस लड़की को उसके जमीन के अन्दर वाले महल से उठा कर लायी थी। उसने मीनार की चोटी पर एक घोंसला बनाया और वहाँ दस अंडे दिये। उन दस अंडों में से दस बच्चे निकले।

वह कैदी ग्वालिन उस चिड़िया से रोज कहती — "चिड़िया ओ चिड़िया, जैसे तुम मुझे मेरे घर से बाहर निकाल कर लायी थीं उसी तरह तुम मुझे यहाँ से भी बाहर निकालो।"

मीनार के पास ही एक और महल था जिसमें राजा की तीनों बड़ी वाली लड़कियॉ रहती थीं। एक दिन जब वे खिड़की पर खड़ी थीं तो उन्होंने उस ग्वालिन के शब्द सुन लिये और राजा को जा कर उनको बता दिया।

राजा ने हुकुम दिया कि उस चिड़िया और उसके बच्चों को उस मीनार से नीचे फेंक दिया जाये ताकि वे सब जमीन पर गिरते ही मर जायें। चौकीदारों ने उस चिड़िया का घोंसला उसके बच्चों के साथ साथ उस मीनार से नीचे फेंक दिया। नीचे गिरते ही उस चिड़िया के सारे बच्चे मर गये।

उसी शाम उस ग्वालिन ने उस बड़ी चिड़िया को अपने मरे हुए बच्चों के ऊपर उड़ते हुए देखा। उसकी चोंच मे एक खास किस्म की घास का गुच्छा था। उसने उस घास के गुच्छे को उन मरे हुए बच्चों के ऊपर फेरा और उसके सब बच्चे ज़िन्दा हो गये।

यह देख कर ग्वालिन को बड़ा आश्चर्य हुआ और वह उस चिड़िया से बोली — "मुझे भी थोड़ी सी यह जादू की घास ला दो न।"

यह सुन कर वह चिड़िया वहॉ से उड़ गयी और अपने पंखों में वैसी ही थोड़ी सी घास ले कर वापस आ गयी। उस लड़की ने वह घास उससे ले ली और राजकुमार के शरीर को उस घास से सहलाया। धीरे धीरे राजकुमार ज़िन्दा हो गया।

यह कहना मुश्किल है कि उन दोनों में से कौन ज़्यादा खुश था, ग्वालिन या राजकुमार। पर ग्वालिन ने उसको गले से लगा लिया और वे काफी देर तक एक दूसरे से हॅस हॅस कर बातें करते रहे।

हालॉकि उन्होंने यह खुशी की खबर किसी को नहीं बतायी पर फिर भी राजा की सबसे छोटी बेटी को यह पता चल गया कि उसका भाई ज़िन्दा हो गया है और उसने उस दिन वहॉ बहुत सारे स्वादिष्ट खाने भिजवाये और फिर वह वहॉ रोज रोज वैसे ही खाने भेजती रही।

उसके भाई ने अपनी बहिन को एक गिटार भी भिजवाने के लिये कहा तो उसने उसको एक गिटार भी भिजवा दिया।

अब क्या था ग्वालिन और राजकुमार उस मीनार के ऊपरी हिस्से में गा बजा कर अपने दिन गुज़ारने लगे। पास वाले महल में से जिसमें वे तीन लड़कियॉ रहती थीं उस मीनार से गाने और गिटार बजाने की आवाज सुनी तो उन्होंने सोचा कि वे वहॉ जा कर देखें कि वहॉ क्या हो रहा है।

पर जब वे तीनों लड़कियॉ वहॉ पहुँची तो देखा कि राजकुमार अपने ताबूत में पहले की तरह से लेटा हुआ था और वह लड़की भी दुखी सी बैठी थी सो वे तीनों बहिनें बेवकूफों की तरह से अपना सा मुँह ले कर वहॉ से वापस लौट आयीं। पर उस रात उन्होंने मीनार से आती गाने बजाने की आवाज फिर से सुनी।

वे अपने पिता राजा के पीछे पड़ी रहीं कि उस मीनार में कुछ गड़बड़ हो रही थी इसलिये उस लड़की को किसी दूसरी जगह भिजवा दिया जाये। और उस ग्वालिन को उन्होंने एक दूसरी जेल में भिजवा ही दिया।

जब चौकीदार उसको लेने के लिये वहॉ गये तो उन्होंने देखा कि वह लड़की तो राजकुमार की बॉहों में बॉहें डाल कर बैठी हुई है। यह बात चौकीदारों ने जा कर राजा से कही तो राजा, रानी और उनकी चारों बेटियॉ वहॉ राजकुमार को ज़िन्दा देखने के लिये आये।

उन्होंने देखा कि राजकुमार तो सचमुच ज़िन्दा था और तन्दुरुस्त था। यह देख कर तो सारे शाही परिवार की बोलती बन्द हो गयी। राजकुमार बोला — "पिता जी, मॉ, बहिनों, मैं आप सबको अपनी पत्नी से मिलाना चाहता हूँ।"

उसकी सबसे छोटी बहिन ने ताली बजायी पर उसकी दूसरी तीनों बहिनों को एक ग्वालिन को अपनी भाभी बनाने का विचार कुछ जमा नहीं। जब वे उसको बिल्कुल ही नहीं सह सकीं तो उन्होंने उसकी हॅसी उड़ानी शुरू कर दी और उसका अपमान करना शुरू कर दिया।

राजा ने अपने बेटे की शादी उस ग्वालिन के साथ तय कर दी और शादी का दिन पास आने लगा। शादी से पहले दुलहिन ने राजकुमार की बहिनों से कहा — "अब मुझे घर जाना चाहिये और

अपने माता पिता से मिलना चाहिये। मुझे बताओ कि मैं तुम लोगों के लिये वहॉ से क्या क्या भेंट ले कर आऊॅ।"

सबसे बड़ी लड़की ने कहा — "एक बोतल दूध।"

दूसरी लड़की बोली — "थोड़ी सी रिकोटा चीज़[7]।"

तीसरी लड़की बोली — "मुझे तो एक टोकरी लहसुन चाहिये।"

यह सुन कर वह ग्वालिन अपने घर चली गयी पर वह खेत पर नहीं गयी। अबकी बार वह अपने असली माता पिता के पास गयी जिन्होंने उसको ज़मीन के नीचे उसके लिये महल बनवा कर उसमें उसको अठारह साल तक कैद रखा था।

एक हफ्ते बाद वह एक बहुत सुन्दर गाड़ी में जिसको सफेद घोड़े खींच रहे थे दुलहे के घर लौटी। उसको इतनी बढ़िया शाही गाड़ी में बैठा देख कर उसकी तीनों बड़ी ननदों के मुॅह से एक साथ ही निकला — "अरे यह ग्वालिन एक शाही गाड़ी में?"

वह ग्वालिन गाड़ी में से उनकी भेंटें ले कर बाहर निकली। उसने अपनी सबसे बड़ी ननद को एक बोतल दूध दिया। यह दूध एक चॉदी की बोतल में था और यह बोतल एक सुनहरे कपड़े में लिपटी हुई थी।

[7] It is kind of processed Paneer.

दूसरी ननद को उसने रिकोटा चीज़ दी। वह सोने के डिब्बे में रखी थी और तीसरी ननद को उसने एक टोकरी लहसुन दी। उस लहसुन की कलियॉ हीरे की और पत्ते पन्ने के थे।

उसकी सबसे छोटी ननद ने पूछा — "और तुम मेरे लिये क्या ले कर आयीं भाभी जिसने हमेशा तुम्हें इतना प्यार किया?"

ग्वालिन ने गाड़ी का दरवाजा खोला और उसमें से उसने एक बहुत ही सुन्दर नौजवान को बाहर निकाला। उसको उसने अपनी सबसे छोटी ननद के हवाले करते हुए उससे कहा — "यह मेरा छोटा भाई है जो मेरे वहॉ से आने के बाद पैदा हुआ था। इसे मैं तुम्हें सौंपती हूॅ।"

ग्वालिन की शादी उस राजकुमार से हो गयी और राजकुमार की बहिन की शादी उसके बाद ग्वालिन के भाई से हो गयी। सब लोग खुशी खुशी रहने लगे।

2 शेरों की घास[8]

घास से ज़िन्दा करने की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बढ़ई[9] था जिसकी एक बहुत ही सुन्दर बेटी थी पर वे लोग बहुत गरीब थे। बेटी का नाम मारियोरसोला[10] था और क्योंकि वह बहुत सुन्दर थी उसका पिता कभी उसको घर से बाहर नहीं जाने देता था। यहाँ तक कि वह उसको खिड़की के बाहर भी नहीं झाँकने देता था।

इस बढ़ई के सामने वाले घर में एक सौदागर रहता था। यह सौदागर बहुत अमीर था और इसके एक ही बेटा था। उसके बेटे ने सुना कि उसके सामने वाले घर में रहने वाले बढ़ई की बेटी बहुत सुन्दर है।

बस वह उस बढ़ई के घर जा पहुँचा और उससे बोला — "मिस्टर ऐन्थोनी[11]? क्या आप मेरे लिये दो मेजें बना देंगे?"

बढ़ई बोला — "जनाब, अगर आप मुझे लकड़ी ला देंगे तो। क्योंकि मेरे पास लकड़ी खरीदने के लिये पैसे नहीं हैं। जैसे ही मुझे लकड़ी मिल जायेगी मैं आपके लिये दो मेजें बना दूँगा।"

---

[8] The Lions' Grass (Story No 194) – a folktale from Italy from its Nurra area.
Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[9] Translated for the word "Carpenter"
[10] Mariorsola – name of the carpenter's daughter
[11] Mr Anthony – name of the carpenter

वह चालाक लड़का उसके लिये लकड़ी ले तो गया पर यह लकड़ी उसके माता पिता की थी और उसके माता पिता यह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि उनका बेटा जो हमेशा उस बढ़ई की लड़की को देखने की कोशिश करता रहता था उस गरीब आदमी के घर जाये।

एक दिन मारियोरसोला ने सोचा कि शायद वह लड़का अब वहॉ से चला गया होगा तो वह सीढ़ियों से उतर कर नीचे आयी पर वह लड़का तो तब तक भी वहॉ से नहीं गया था सो पैपीनो[12] ने उसको देख लिया और देखते ही उसको चाहने लगा।

उसने बढ़ई से कहा — "मिस्टर ऐन्थोनी, मैं आपसे अपनी शादी के लिये मारियोरसोला का हाथ मॉग रहा हूॅ।"

बढ़ई बोला — "मेरे बच्चे, मेरे साथ मजाक मत करो। मारियोरसोला बहुत गरीब है आपके माता पिता उसको अपनी बहू नहीं बनायेंगे।"

पैपीनो बोला — "मैं मजाक नहीं कर रहा मिस्टर ऐन्थोनी। आप मेरे माता पिता की चिन्ता न करें। मारियोरसोला मुझे बहुत अच्छी लगती है और मैं अगर शादी करूॅगा तो बस उसी से शादी करूॅगा और किसी से नहीं।"

सो पैपीनो के माता पिता को बिना बताये ही दोनों की शादी की बात पक्की हो गयी। पैपीनो की मॉ को यह बात शहर वालों से

[12] Peppino – the name of the son of the merchant

पता चली कि उसके बेटे ने अपनी शादी पक्की कर ली है। मालूम पड़ते ही यह बात उसने अपने पति से कही।

सौदागर बोला — "अब क्या करें, हमको तो अब इसे घर से बाहर निकलना ही पड़ेगा।"

जब रात को पैपीनो घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे कहा — "तुम देख रहे हो कि मैं बूढ़ा हो रहा हूँ इसलिये अब तुमको जहाज़ में सामान ले कर व्यापार के लिये जाना चाहिये और व्यापार सीखना चाहिये।"

बेटा बोला — "ठीक है। मुझे बता दीजियेगा कि कब जाना है।"

अगले दिन पैपीनो ने मारियोरसोला से कहा — "मुझे बाहर व्यापार करने जाना है।"

बेचारी मारियोरसोला तो यह सुन कर रो पड़ी। पैपीनो ने उसको कुछ पैसे दिये और कहा — "खुश रहना और चिन्ता नहीं करना मैं जल्दी ही घर वापस लौटूँगा। और हाँ देखो मुझे कभी भूलना नहीं।"

अगले दिन जब वह अपनी यात्रा पर जा रहा था तो मारियोरसोला ने अपनी खिड़की से झाँका और पैपीनो को सड़क पर खड़े लोगों से कहते हुए सुना — "अच्छा विदा, मैं चलता हूँ और अब मैं एक साल बाद लौटूँगा।"

पैपीनो की आवाज सुन कर मारियोरसोला तो बेहोश सी हो गयी। उसको बिस्तर में लिटा दिया गया और उस दिन के बाद से तो वह बस ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलने लगी।

एक साल बाद पैपीनो टौरैस के बन्दरगाह[13] पर उतरा और तुरन्त ही अपने घर सन्देश भेजा कि वह अपनी यात्रा से सही सलामत वापस आ गया है और उसके लिये एक गाड़ी भेज दी जाये ताकि वह वह सामान जो ले कर आया है उसे उस गाड़ी में भर कर घर ला सके।

उसके माता पिता और दोस्त लोग सब उससे मिलने आये। उन सबसे मिलने के बाद उसने अचानक पूछा — "हमारी गली में और सब कैसे हैं?"

उसको बताया गया — "सब लोग ठीक हैं सिवाय ऐन्थोनी की बेटी मारियोरसोला के। अगर वह अभी मर नहीं गयी है तो वह बहुत जल्दी ही मर जायेगी। वह तो जबसे तुम गये हो तभी से बिस्तर में पड़ी है।" यह सुन कर पैपीनो तो वहीं बेहोश हो गया।

लोगों ने पैपीनो को उठा कर गाड़ी में रखा और घर ले गये। डाक्टर बुलाया गया। असल में मारियोरसोला के बारे में सुन कर उसका दिल टूट गया था पर डाक्टर को तो यह पता ही नहीं था कि उसको क्या हुआ है। पैपीनो की मॉ भी बहुत परेशान थी।

[13] Port Torres

व्यापार पर जाने से पहले पैपीनो ने केवल अपने दो करीब के दोस्तों को ही अपनी छिपी हुई शादी के बारे में बताया था।

उसके ये दोस्त डाक्टर के पास गये और बोले — "डाक्टर, ऐसा हुआ है कि इसने अपने माता पिता को बताये बिना ही शादी कर ली थी। फिर यह व्यापार करने चला गया।

इसकी पत्नी तभी से बहुत ज़्यादा बीमार है जबसे यह व्यापार करने गया। इसकी बीमारी यही है। जब तक इसकी पत्नी ठीक नहीं होगी तब तक यह भी ठीक नहीं हो सकता।"

डाक्टर ने यह सब पैपीनो की मॉ से कहा तो पैपीनो के पिता ने पैपीनो की मॉ से कहा — "अब हम क्या करें?"

उसका पिता इस बात से बहुत ज़्यादा परेशान था कि उसके बेटे ने एक गरीब की लड़की से शादी कर ली थी।

पैपीनो की मॉ बोली — "बजाय इसके कि हम अपने बेटे को मरने दें अच्छा तो यही होगा कि हम उसको उस बढ़ई की लड़की से शादी की इजाज़त दे दें।" और उसने तुरन्त ही किसी को यह पता करने के लिये भेज दिया कि मारियोरसोला कैसी थी।

मारियोरसोला की मॉ ने जवाब दिया — "मारियोरसोला तो मरने वाली है। इतने समय तक जब तक वह बीमार थी तब तो तुम लोगों में से किसी ने उसके बारे में कभी पूछा नहीं और अब जब तुम्हारा अपना बेटा मर रहा है तब तुम लोग उसके बारे में पूछ रहे हो?"

पैपीनो की माँ बोली — "मैं उसको अपने घर ले जा रही हूँ।"

मारियोरसोला की माँ बोली — "मैं कहती हूँ कि उसको तुम यहीं रहने दो वह मर रही है।"

पर पैपीनो की माँ ने बहुत जिद की और वह मारियोरसोला को किसी तरह अपने घर ले गयी। वहाँ जा कर उसने उसको एक सोफे पर लिटा दिया जो पैपीनो के पलंग के सामने ही पड़ा था।

फिर उसने अपने बेटे को पुकारा — "पैपीनो, बेटा देखो कौन आया है। मारियोरसोला आयी है।"

ये शब्द सुन कर पैपीनो के बेजान से शरीर में कुछ जान आयी और वह अपने पलंग से नीचे उतरा। उसने भी पुकारा — "मारियोरसोला।"

उधर पैपीनो को अपने बिस्तर के पास देख कर मारियोरसोला भी धीरे धीरे ठीक होने लगी और धीरे धीरे दोनों ठीक हो गये। जब वे बिल्कुल ठीक हो गये तब शादी का जश्न मनाया गया।

पर कुछ दिनों बाद मारियोरसोला फिर बीमार पड़ गयी। वह बोली — "सुनो पैपीनो, अगर मैं मर जाऊँ तो मेरे मरे शरीर पर "औफिस औफ द डैड"[14] जरूर पढ़ देना।" और लो यह कह कर तो वह मर ही गयी।

[14] "Office of the Dead" – The Office of the Dead or Office for the Dead is a prayer cycle of the Canonical Hours in the Catholic Church, Anglican Church and Lutheran Church, said for the repose of the soul of a decedent. It is the proper reading on All Souls' Day (normally November 2) for all souls in Purgatory, and can be a votive office on other days when said for a particular decedent. The work

सब उसको चर्च ले गये और पैपीनो उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना भूल गया।

उसी रात उसने सोचा — "अरे मैं उसके ऊपर औफिस औफ द डैड पढ़ना तो भूल ही गया।" बस वह तुरन्त ही चर्च की तरफ भागा गया और चर्च का दरवाजा खटखटाया।

चर्च के चौकीदार ने पूछा — "कौन है?"

पैपीनो बोला — "मैं हूँ पैपीनो। दरवाजा खोलो"

चौकीदार आया और उसने दरवाजा खोला तो पैपीनो बोला — "उस मरी हुई लड़की की कब्र खोलो मैं तुमको दस काउन दूँगा।"

चौकीदार बोला — "यह मैं कैसे कर सकता हूँ लोगों ने सुन लिया तो?"

पैपीनो बोला — "किसी को पता नहीं चलेगा अभी तो घुप अँधेरा है।" सो उस चौकीदार ने उस लड़की की कब्र खोद दी और पैपीनो को वहाँ छोड़ दिया। पैपीनो घुटनों के बल बैठा और औफिस औफ द डैड पढ़ने लगा।

जब वह औफिस औफ द डैड पढ़ रहा था तो उसको चिंघाड़ने की आवाज सुनायी पड़ी और उसने दो शेर चर्च में आते देखे। आते ही शेरों ने लड़ना शुरू कर दिया। एक ने दूसरे को काटा और इस तरह एक शेर ने दूसरे शेर को मार दिया।

---

is composed of different psalms, scripture, prayers and other parts, divided into The Office of Readings, Lauds, Day time Prayers etc.

ज़िन्दा शेर वहॉ से भाग गया और उसी चर्च के मैदान में उगी थोड़ी सी घास उखाड़ कर ले आया और उस मरे हुए शेर के मुँह में ठूँस दी और कुछ घास उसने उसके दॉतों पर भी मल दी। लो वह मरा हुआ शेर तो ज़िन्दा हो गया और फिर दोनों शेर वहॉ से भाग गये।

इतनी देर में पैपीनो ने औफिस औफ द डैड पढ़ लिया था सो उसने सोचा क्यों न मैं भी इस घास को मारियोरसोला पर आजमा कर देखूँ। शायद उस घास के इस्तेमाल से मेरी मारियोरसोला भी ज़िन्दा हो जाये।

यह सोच कर वह भी चर्च के बाहर गया और वहॉ से थोड़ी सी घास तोड़ लाया और उसको मारियारसोला के दॉतों पर मल दिया। तो लो वह तो ज़िन्दा हो गयी।

ज़िन्दा होते ही उसने पूछा — "पैपीनो, यह तुमने क्या किया? मैं तो अपने हालात से बहुत खुश थी।" पैपीनो ने उसको अपना शाल[15] ओढ़ाया और उसका हाथ पकड़ कर कब्र में से उठा कर घर ले जाने लगा।

तभी चर्च का चौकीदार भी आ गया। वह बोला — "यह सब यहॉ क्या हो रहा है? यह तुम क्या कर रहे हो? इस मरी हुई लड़की को कहॉ ले जा रहे हो?"

[15] Translated for the word "Cloak" – see its picture above.

पैपीनो बोला — "मुझे जाने दो। यह मेरी पत्नी है और मेरी पत्नी ज़िन्दा है।"

चौकीदार तो यह देख कर बेहोश होते होते बचा। पैपीनो मारियोरसोला को घर ले गया। उसको बिस्तर पर लिटा दिया और उसको एक गरम चादर ओढ़ा दी ताकि उसको थोड़ी गरमी आ जाये। उसके बाद वह भी उसके पलंग के पास बिछे एक पलंग पर सो गया।

अगली सुबह सात बजे जब पैपीनो की माँ ने दरवाजा खटखटाया तो मारियोरसोला ने पूछा — "कौन है?"

मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर तो पैपीनो की माँ की साँस ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गयी और वह नीचे दौड़ी। इस परेशानी में वह सीढ़ियों से नीचे गिर पड़ी। उसका सिर जमीन से टकरा गया और वह मर गयी।

कुछ देर बाद एक नौकरानी ऊपर गयी और उसने भी पैपीनो के कमरे का दरवाजा खटखटाया। मारियोरसोला ने फिर पूछा — "कौन है? क्या तुम अभी भी दरवाजा खटखटा रहे हो?"

यह नौकरानी भी मरी हुई लड़की की आवाज सुन कर डर गयी और सीढ़ियों से नीचे भागी। नीचे भागते समय वह भी गिर गयी। उसके सिर में भी चोट लगी और वह भी मर गयी।

कुछ देर बाद पैपीनो की ऑख खुलीं तो मारियोरसोला बोली — "इस घर में तो कोई सो भी नहीं सकता। ये लोग हमेशा ही दरवाजा खटखटाते रहते हैं।"

पैपीनो ने आश्चर्य से पूछा — "और तुमने जवाब दिया?"

"हॉ मैंने जवाब दिया।"

पैपीनो परेशान सा बोला — "यह तुमने क्या किया? वे लोग तो यह सोच चुके थे कि तुम मर चुकी हो।"

वह तुरन्त उठा और उसने दरवाजा खोला तो उसने देखा कि उसकी मॉ और नौकरानी दोनों सीढ़ियों के नीचे मरी पड़ी हैं। उसके मुॅह से निकला — "ओह यह हमारे ऊपर क्या मुसीबत आ पड़ी। पर अभी मुझे इसके बारे में चुप ही रहना चाहिये नहीं तो मेरी पत्नी डर जायेगी।"

यह सोच कर वह तुरन्त ही चर्च भागा गया। वहॉ से वह ज़िन्दा करने वाली घास ले कर आया और अपनी मॉ और नौकरानी दोनों को ज़िन्दा किया।

जब मारियोरसोला बीमार थी तो उसने सेन्ट गवीनो के चर्च[16] जाने की मन्नत मॉगी थी कि अगर वह ठीक हो जायेगी तो वह सेन्ट गवीनो के चर्च जायेगी। सो एक दिन उसने पैपीनो से कहा कि वह सेन्ट गवीनो के चर्च जाना चाहती है।

पैपीनो ने कहा — "हॉ हॉ कल ही चलें?"

[16] Church of Saint Gavino

अगले दिन वे सेन्ट गवीनो के चर्च चल पड़े पर कुछ दूर जाने के बाद मारियोरसोला बोली — "पैपीनो, मैं अपनी अँगूठी तो खिड़की पर ही रखी भूल आयी हूँ।"

पैपीनो बोला — "अभी तुम उसकी चिन्ता छोड़ो और अभी तुम केवल चर्च चलो।"

मारियोरसोला बोली — "नहीं नहीं, मैं उसको लेने के लिये अभी वापस घर जा रही हूँ क्योंकि अगर कहीं हवा का कोई झोंका आ गया तो वह नीचे गिर जायेगी।"

पैपीनो ने उसको तसल्ली दी — "ठीक है। मैं उसको उठा कर ले आऊँगा पर इस बीच तुम समुद्र के पास नहीं जाना जहाँ मसकोवी के राजा[17] की नाव है।" कह कर पैपीनो मारियोरसोला की अँगूठी लाने चला गया।

पैपीनो के जाने के बाद मारियोरसोला उसके मना करने पर भी समुद्र की तरफ चल दी। वहाँ मसकोवी के राजा की नाव खड़ी थी। बस उन लोगों ने उसको देखा तो उसको पकड़ कर वहाँ से ले गये।

जब पैपीनो उसकी अँगूठी ले कर वापस आया तो उसको मारियोरसोला कहीं दिखायी नहीं दी। उसने चारों तरफ देखा भी पर फिर भी वह उसको कहीं दिखायी नहीं दी तो वह समुद्र में कूद पड़ा

[17] The King of Muscovy

और तैर गया। थोड़ी दूर जा कर उसको एक नाव दिखायी दी तो उसने एक सफेद कपड़ा उसको दिखा कर हिलाया[18]।

नाव के मालिक ने कहा — "जल्दी करो। एक आदमी समुद्र में डूब रहा लगता है।" वे नाव वाले जल्दी जल्दी पैपीनो के पास आये और उसको समुद्र में से निकाल कर अपनी नाव पर चढ़ा लिया।

पैपीनो ने उनसे पूछा — "क्या तुम लोगों ने राजा मसकोवी की नाव देखी है?"

वे बोले — "नहीं, हमने तो नहीं देखी।"

पैपीनो बोला — "तो मेहरबानी करके मुझे मसकोवी ले चलो।" सो वे उसको मसकोवी ले गये।

वहॉ मसकोवी में तो मारियोरसोला रानियों की तरह सजी बैठी थी। जब पैपीनो ने उसको देखा तो वह उसकी तरफ देख कर मुस्कुराया पर मारियोरसोला ने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया।

उसके पास तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं था सो वह वहॉ के राजा के पास गया और अपने आपको खाना परसने वाला बता कर अपना परिचय दिया। राजा ने उसको एक खाने की मेज पर काम करने की नौकरी दे दी।

[18] Waving the white cloth is the symbol of Peace. This shows that he was not an enemy and wanted some help from the boat.

जब उसने मारियोरसोला को मेज पर अकेला बैठा देखा तो उससे बोला — "अगर तुम मेरी मारियोरसोला हो तो तुम मुझे क्यों नहीं पहचानतीं?"

उसने बुरा सा मुँह बनाया और अपना मुँह दूसरी तरफ को घुमा लिया। उसने उसको तंग करने का पहले से ही एक प्लान बना रखा था। उसने राजा के एक नौकर से पैपीनो की तरफ इशारा करते हुए कहा — "ये सारी चाँदी की चम्मचें उठाओ और उस आदमी की जेब में डाल दो।"

जब उस नौकर ने वे चाँदी की चम्मचें पैपीनो की जेब में डाल दीं तो उसने उसे फिर हुकुम दिया — "इस आदमी की जेबों की तलाशी लो।" पैपीनो की जेबों की तलाशी ली गयी तो उसकी जेबों में वे चम्मचें मिल गयीं जो उसकी जेबों में रखवायी गयी थीं।

वह बोली — "तो यह है वह चोर जिसने हमारी चम्मचें चुरायी हैं। इसे अभी जेल में डाल दो। फिर इसको हमारी खिड़की के सामने फाँसी लगा देना।"

पैपीनो के पास अभी भी वह शेरों वाली घास थी सो जब वह फाँसी के तख्ते की तरफ ले जाया जा रहा था तो उसने पादरी को थोड़ी सी वह घास दी और उससे कहा — "पादरी जी, मैं बिल्कुल बेकुसूर हूँ मैने कोई चम्मच आदि नहीं चुरायी है।

इसलिये जब वे मुझे फाँसी लगायें तो आप ज़रा यह ख्याल रखें कि वे मेरी गरदन न तोड़ें। फाँसी लगा कर वे मुझे आपके घर ले

जायें और जब वे मुझे आपके घर में छोड़ कर चले जायें तो वहाँ आप यह घास मेरे दाँतों पर मल देना इससे मैं ज़िन्दा हो जाऊँगा।"

सो जब फाँसी लगाने का समय आया तो पादरी ने फाँसी लगाने वाले से कहा कि इसको ध्यान से फाँसी लगाना इसकी गरदन न टूटने पाये। फिर उसने राजा से इस बात की इजाज़त भी ले ली कि फाँसी के बाद वह उसके शरीर को अपने घर ले जायेगा।

फाँसी लगाने वाले ने फाँसी लगाते समय इस बात का ध्यान रखा कि उसकी गरदन न टूटने पाये।

फाँसी के बाद पादरी उसके शरीर को अपनी मोनैस्टरी[19] ले गया। वहाँ जा कर पादरी ने उसकी दी हुई घास उसके दाँतों पर मल दी तो वह ज़िन्दा हो गया। पैपीनो ने पादरी को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने रास्ते चल दिया।

फिर वह सात राजाओं के राजा के देश[20] गया। इत्तफाक की बात कि उस देश के राजा की पत्नी तभी तभी मरी थी सो सारा महल दुख में डूबा हुआ था।

पैपीनो के लिये राजा को प्रभावित करने का यह बहुत अच्छा मौका था सो वह राजा के महल की तरफ चल दिया। वह महल पहुँचा और उसने महल के चौकीदार से कहा — "मैं महल के अन्दर जाना चाहता हूँ और राजा से मिलना चाहता हूँ।"

[19] A monastery is the building or complex of buildings comprising the domestic quarters and workplace(s) of monastics, whether monks or nuns, and whether living in communities or alone (hermits).

[20] Country of the Seven Crowns

चौकीदार ने पूछा — "क्या तुम सोचते हो कि इस समय उनको तुम्हारी जरूरत है?"

पैपीनो ने फिर कहा — "मैंने कहा न कि उनको बोलो कि मैं अन्दर आना चाहता हूँ।"

चौकीदार तो उसको अन्दर नहीं जाने देना चाहता था पर जब पैपीनो ने बहुत ज़िद की तो वह उसको महल के अन्दर ले गया। वहाँ जा कर पैपीनो ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, अगर आप मुझे रानी जी के साथ कुछ देर के लिये अकेला छोड़ दें तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी।"

राजा उसकी यह अनोखी बात सुन कर कुछ परेशान सा हो गया और तुरन्त ही कुछ बोल नहीं सका। पर इसमें अपना कुछ नुकसान न देखते हुए उसने सबको वहाँ से बाहर निकाल दिया और फिर खुद भी बाहर चला गया।

अब पैपीनो रानी की लाश के साथ बिल्कुल अकेला रह गया। उसने कमरे का दरवाजा बन्द किया, रानी के शरीर को ताबूत[21] में से बाहर निकाला और उसको पलंग पर लिटा दिया।

[21] Translated for the "Coffin" – in which Christians keep their dead body to be buried. See its picture above.

उसने थोड़ी सी वह शेरों वाली घास निकाली और रानी के होठों के बीच में रख दी। कुछ पल में ही रानी ज़िन्दा हो गयी।

पैपीनो ने कमरे का दरवाजा खोल दिया और राजा को अन्दर बुला कर कहा — "मैजेस्टी, यह रही आपकी रानी।"

रानी को ज़िन्दा देख कर वहाँ मौजूद सारे लोग रोना तो भूल गये और खुशियाँ मनाने लगे।

उस दिन के बाद से राजा पैपीनो को हमेशा अपने साथ रखता था।

एक दिन राजा ने पैपीनो से कहा — "पैपीनो, मैं तो अब बूढ़ा हो रहा हूँ और तुम तो हमारे बेटे की तरह ही हो सो अपने सात ताज मैं तुमको देता हूँ।"

पैपीनो बोला — "कौन कौन राजा लोग इस सात ताजों के राजा बनने की रस्म में आयेंगे?"

राजा बोला — "स्पेन, इटली, फ्रांस, पुर्तगाल, इंगलैंड, आस्ट्रिया और मसकोवी के राजा आयेंगे। ये सात राजा हैं जो सात राजाओं के राजा को ताज पहनायेंगे।"

"तब मैं यह ताज स्वीकार करता हूँ।"

सब राजाओं को बुलावा भेज दिया गया। मसकोवी का राजा अपनी पत्नी के साथ आने के लिये तैयार हुआ। उसकी पत्नी मारियोरसोला ने इस खास मौके के लिये एक खास पोशाक बनवायी थी।

ताजपोशी की रस्म के बाद एक दावत का इन्तजाम था। इस दावत के बाद सात ताजों के ताज वाला राजा पैपीनो बोला — "अब हम सब एक एक कहानी सुनायेंगे।"

सो हर एक ने कोई न कोई कहानी सुनायी। आखीर में पैपीनो बोला — "अब आप सबको मैं एक कहानी सुनाता हूँ पर यह कहानी नहीं है सच है। जब तक मैं अपनी कहानी पूरी न कर लूँ कोई इस मेज पर से उठेगा नहीं।"

तब पैपीनो ने अपनी पूरी कहानी सुनायी – मारियोरसोला से मुलाकात से ले कर, अपनी शादी से ले कर, अब तक की। कहानी सुन कर मारियोरसोला तो बहुत बेचैन हो गयी।

उसने सिर दर्द का बहाना किया और वहाँ से जाने की इजाज़त माँगी पर पैपीनो ने उसको हाथ हिला कर बैठने का इशारा किया और बोला — "नहीं, कोई यहाँ से नहीं उठेगा।"

अपनी कहानी के आखीर में उसने मसकोवी के राजा से पूछा — "ऐसी स्त्री को क्या सजा मिलनी चाहिये?"

मसकोवी का राजा बोला — "उसको तो सबसे पहले फाँसी पर चढ़ा देना चाहिये, फिर उसे जला देना चाहिये और फिर उसकी राख को हवा में उड़ा देना चाहिये।"

पैपीनो ने हुकुम दिया "ऐसा ही किया जाये। मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लो।"

मसकोवी के राजा की पत्नी को पकड़ लिया गया और पैपीनो के लोग उसको फॉसी के फन्दे की तरफ ले चले।

पैपीनो अब सात ताजों का बादशाह था।

3 सात पोशाकों वाली सुन्दरी[22]

घास से ज़िन्दा करने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी था जिसके दो बेटे थे। जब उसको लगा कि वह मरने वाला है तो उसने अपने बड़े बेटे को बुलाया और कहा — "बेटा, मैं तो अब मरने वाला हूँ मेरे और जीने की अब कोई उम्मीद भी नहीं है। तुम मुझे बताओ कि तुमको क्या चाहिये मेरा आशीर्वाद या मेरे पैसे?"

इधर उधर की बातें किये बिना ही वह लड़का बोला — "मुझे तो आप अपना पैसा दे दीजिये पिता जी, क्योंकि केवल आपके आशीर्वाद से तो मैं भूखा ही मर जाऊँगा।"

उसके बाद उसने अपने छोटे बेटे को बुलाया और उससे भी वही सवाल पूछा तो पहले तो उसका बेटा यह सुन कर रो पड़ा कि उसका पिता मरने वाला है क्योंकि वह अपने पिता को बहुत प्यार करता था।

फिर सँभल कर बोला — "पिता जी, पैसे की मेरे लिये कोई कीमत नहीं है मुझे तो केवल आपका आशीर्वाद चाहिये।" और उसको आशीर्वाद दे कर उनका पिता मर गया।

---

[22] Beauty With the Seven Dresses (Story No 143) – a folktale from Italy from its Calabria area. Adaped from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

उसके दोनों बेटे उसको दफ़नाने के लिये कब्रिस्तान ले गये। छोटा बेटा जिसके पास अपने पिता का केवल आशीर्वाद था बहुत रोया जबकि बड़ा बेटा जिसको उसकी सारी जायदाद और पैसा मिला था वह वहॉ खड़े खड़े भी यह सोच रहा था कि वह अपने पिता के उस पैसे और जायदाद को किस तरीके से इस्तेमाल करेगा।

आखीर में उसने निश्चय किया कि वह एक कैफ़े खोलेगा और उसने एक कैफ़े खोल लिया और उसके काउन्टर के पीछे खड़ा हो गया। उसका छोटा भाई जिसका नाम फ्रान्सैस्को[23] था अपनी किस्मत आजमाने के लिये घर छोड़ कर बाहर दुनियॉ में चल दिया।

काफी चलने के बाद एक शाम को उसको एक छोटी सी रोशनी दिखायी दी। वह रोशनी उससे बहुत दूर थी। उसको देख कर उसने सोचा — "अगर भगवान ने चाहा तो मुझे वहॉ पहुॅचना ही चाहिये।"

सो भगवान ने वैसा ही चाहा जैसा उसने चाहा और वह वहॉ पहुॅच गया। वहॉ एक घर था। वहॉ पहुॅच कर उसने उस घर का दरवाजा खटखटाया तो एक सात पोशाकों वाली एक सुन्दरी अपनी सात नौजवान स्त्रियों के साथ दरवाजा खोल कर बाहर आयी और उसको अन्दर ले गयी। उसने उसको खाना खिलाया और सोने की जगह दी।

[23] Francesco – the name of the younger son.

सुबह को उस सुन्दरी ने उस नौजवान से बातें की तो उसको लगा कि उसको उस नौजवान से शादी कर लेनी चाहिये क्योंकि वह उसके रूप रंग और उठने बैठने के ढंग से बहुत प्रभवित थी। सो उसने उससे यह बात कह ही दी कि वह उससे शादी करना चाहती है। वह खुद भी बहुत सुन्दर थी और देखने में शानदार थी सो कुछ ही दिन में उनकी शादी हो गयी।

एक दिन जब वे खिड़की के बाहर बागीचे की तरफ देख रहे थे तो उस सुन्दरी ने अपने पति से कहा — "चिचिलो[24], क्या तुमको पेड़ पर टॅगी वह सात हिस्सों वाली पोशाक दिखायी दे रही है?"

उसने ऐसा इसलिये कहा कि उस एक पोशाक में एक के अन्दर एक ही सात पोशाकें शामिल थीं।

वह बोला — "हॉ हॉ दिखायी दे रही है। पर तुम यह मुझसे क्यों पूछ रही हो?"

सुन्दरी बोली — "मैं तुम्हें यह बताना चाहती हूॅ कि अगर कोई चिड़िया उस पोशाक पर आ कर बैठ जाये और तुम उसको पकड़ लो तो तुम मुझे फिर कभी नही देख पाओगे। और अगर तुमने उस चिड़िया को मार दिया तो वह फ्राक उड़ जायेगी और मैं बहुत मुश्किल में पड़ जाऊॅगी।

और अगर इससे कुछ और भी ज़्यादा हुआ तो इस कमरे में एक लाल पोशाक रखी है तुम उसको पहन लेना और मेरी खोज में

[24] Ciccillo – maybe the younger son's nickname

यह घर छोड़ देना। फिर मैं देखूँगी कि तुम मुझको फिर से पा सकोगे।"

और फिर एक दिन ऐसा ही हुआ कि जब वह नौजवान शिकार पर गया हुआ था एक चिड़िया उस सात हिस्से वाली फ्राक पर आ कर बैठ गयी। चिचिलो अपने शिकार के मूड में था सो उसने ध्यान ही नहीं दिया कि वह किसको मार रहा है और उसने उस चिड़िया को मार दिया।

वह सात हिस्से वाली फ्राक तुरन्त ही हवा में उड़ने लगी और ऑखों से ओझल हो गयी। तब चिचिलो को अपनी पत्नी की बात याद आयी। पागल सा वह अपने घर की तरफ दौड़ा। उसको डर था कि जरूर ही कुछ बहुत बुरा हो गया है।

उसको वहॉ देख कर सुन्दरी ने उससे पूछा कि क्या मामला है। वह इतना घबराया हुआ क्यों है पर उसको कुछ भी बताने की उसकी हिम्मत नहीं हो रही थी।

सुन्दरी को कुछ शक सा हुआ तो उसने पेड़ के ऊपर की तरफ देखा तो पाया कि वह सात हिस्से वाली फ्राक तो वहॉ से जा चुकी थी।

इस पर उसने अपने बाल खींचने शुरू कर दिये और बोली — "मुझे धोखा दिया गया है। मेरे साथ छल किया गया है। अब वे लोग आयेंगे और मुझे यहॉ से ले जायेंगे। याद रखना अगर ऐसा कुछ हुआ तो वह लाल पोशाक पहन लेना और मुझे छोड़ना नहीं।"

अब हम इनको तो यहीं छोड़ते हैं और सात हिस्से वाली फ्राक के पीछे पीछे चलते हैं। वह फ्राक उड़ती चली जा रही थी उड़ती चली जा रही थी। उड़ते उड़ते वह एक महल के पास जा पहुँची।

वहाँ से वह खिड़की से हो कर महल के अन्दर घुस गयी और उस महल के राजा की मेज के पास आ कर रुक गयी। राजा वहाँ बैठा कुछ लिख रहा था।

राजा ने उस सात हिस्से वाली पोशाक को इधर उधर से देखा तो उसको आश्चर्य हुआ कि वह पोशाक किसकी है। उसने वहाँ के लोगों से भी पूछा पर किसी को उस पोशाक के बारे में कुछ पता नहीं था।

तभी एक बुढ़िया को पता चला कि राजा एक सात हिस्सों वाली फ्राक के बारे में पता करने की कोशिश कर रहा है तो वह राजा के पास गयी और बोली — "मैं इस पोशाक की मालकिन को ढूँढ कर ला सकती हूँ।"

राजा ने पूछा — "तुम्हें उसको ढूँढने के लिये क्या चाहिये?"

बुढ़िया बोली — "मुझे रोज़ोलियो[25] की दवा मिलायी हुई बोतल चाहिये। एक पौंड मिठाई चाहिये। वह भी दवा मिलायी हुई होनी चाहिये। फिर बाकी मुझ पर छोड़ दीजिये।

[25] Rosolio - Rosolio is a type of Italian liquor derived from rose petals, and which is often used as the basis for the preparation of other liquors of various flavors.

हॉ मुझे एक अच्छे गाड़ीवान के साथ साथ एक अच्छी गाड़ी की भी जरूरत है। मैं अपने कपड़ों में एक खंजर[26] छिपा कर उस गाड़ी में जाऊँगी।" राजा ने उसको ये सब चीज़ें दे दीं और वह बुढ़िया उस गाड़ी में बैठ कर चल दी।

जब वे कुछ दूर चले गये तो उसने गाड़ीवान को एक महल के सामने रोक कर कहा — "तुम यहॉ मेरा इन्तजार करो और जब मैं तुमको पुकारूँ तो तुम अन्दर चले आना।"

उस समय बारिश हो रही थी। वह सीधी महल में चली गयी। वहॉ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो पति सात नौजवान स्त्रियों के साथ उसको अन्दर ले जाने के लिये बाहर आया।

बुढ़िया ने उससे रात को ठहरने की जगह मॉगी तो पति ने उसका खुशी से स्वागत किया और उसको महल के अन्दर ले गया। अन्दर ले जा कर वह उसको खाना खाने के लिये मेज पर ले गया।

मेज पर बैठ कर उस बुढ़िया ने अपनी वह दवा मिली रोज़ोलियो और मिठाई निकाली और बोली — "यह आप जैसे बड़े लोगों के लिये ठीक तो नहीं है पर आप लोग इसको मेरी खुशी के लिये खा लें।

[26] Translated for the word "Dagger". A middle size knife. See its picture above

मेरी बेटी की अभी अभी शादी हुई है और मैं यह थोड़ी ही चीज़ अपने साथ ला सकी हूँ ताकि आप लोग भी इस मौके की खुशी मना सकें।"

जब सबने वह मिठाई खा ली तो वे पति पत्नी दोनों बेहोश हो कर गिर पड़े। उस बुढ़िया ने अपना खंजर निकाला और उससे पति को मार डाला।

फिर उसने गाड़ीवान को आवाज लगायी जो बाहर उसके पुकारने का इन्तजार कर रहा था। बुढ़िया की पुकार सुन कर वह तुरन्त ही अन्दर आ गया।

दोनों ने सुन्दरी को उठाया – एक ने सिर की तरफ से दूसरे ने पैर की तरफ से और उसको गाड़ी में रख दिया जैसे कि वह सो रही हो। उसको गाड़ी में बिठाने के बाद वे राजा के पास दौड़ चले।

राजा उनका बड़ी बेचैनी से इन्तजार कर रहा था। जब वह बुढ़िया वहाँ पहुँची तो उसने सुन्दरी को एक कमरे में अकेले लिटा दिया जब तक वह होश में आती।

सुबह को राजा उसके कमरे में गया तो उसको जगा हुआ पाया पर वह अपनी बदकिस्मती पर रो रही थी। राजा ने उसको तसल्ली देने की कोशिश की पर फिर अचानक पूछा — "हम शादी कब करेंगे?"

इस सवाल पर सुन्दरी ने उसके ऊपर बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया। अब क्योंकि उस लड़की को चुप करने का

और कोई तरीका नहीं था इसलिये उस समय राजा वहॉ से उठ कर चला गया।

एक महीने बाद राजा वहॉ फिर वापस आया और अपना वही सवाल उससे फिर से पूछा तो सुन्दरी ने जवाब दिया — "जब तुमको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जायेगा तब।"

राजा ने आराम की सॉस ली और सारी दुनियॉ में टैलीग्राफ के जरिये खबर भेज दी कि जैसे ही उनको कोई आदमी पूरा का पूरा लाल पोशाक पहने मिल जाये तो वह उसको राजा के पास ले आयें।

पर चिचिलो तो मर चुका था। उस बुढ़िया ने उसको खंजर मार मार कर मार दिया था सो पूरी की पूरी लाल पोशाक वाला आदमी अब किसी को कहॉ से मिलता।

एक दिन चिचिलो का बड़ा भाई जिसने कैफ़े खोला था बहुत गरीब हो गया तो उसने सोचा कि वह किसी और देश में जाये और वहॉ जा कर अपनी किस्मत आजमाये।

सो इत्तफाक से वह भी उसी सड़क पर चल दिया जिस पर उसका छोटा भाई गया था और उसी महल में आ गया जहॉ वह सुन्दरी रहती थी। उसने भी आ कर उस महल का दरवाजा खटखटाया तो सात नौजवान स्त्रियों ने दरवाजा खोला।

उस भाई को देख कर उनको लगा कि वह तो मरा हुआ चिचिलो था क्योंकि दोनों भाइयों की सूरत बहुत मिलती थी। उसको देख कर उन्होंने पूछा — "अरे तुम ज़िन्दा हो गये?"

यह सुन कर बड़ा भाई आश्चर्य से बोला — "क्या मतलब?"

स्त्रियों ने पूछा — "तुम्हारा कोई भाई था क्या जो तुम जैसा दिखायी देता था?"

बड़ा भाई बोला — "हॉ मेरा एक छोटा भाई है पर तुम यह सब क्यों पूछ रही हो?"

तब वे बोलीं — "आओ हमारे साथ आओ तब तुमको पता चलेगा।" कह कर वे उसको एक कमरे में ले गयीं जहॉ एक आदमी मरा पड़ा था। वह मरा हुआ आदमी उसका भाई था।

जैसे ही बड़े भाई ने उस आदमी को देखा तो वह रोने लगा — "ओह मेरे भाई, ओह मेरे भाई।"

उन सातों स्त्रियों ने उसको तसल्ली दी और बताया कि किस तरह चिचिलो को किस बेरहमी से मारा गया था। उन्होंने उसको वहीं अपने पास ही ठहरा लिया।

एक दिन यह बड़ा भाई सुबह को दरवाजे पर खड़ा हुआ था कि उसने दो गिरगिट देखे – एक बड़ा और एक छोटा। देखते देखते बड़े वाले गिरगिट ने छोटे वाले गिरगिट को मार दिया और वहॉ से चला गया।

कुछ देर बाद वह एक तरह का पत्ता लिये लौटा और उस पत्ते को उस मरे हुए गिरगिट के शरीर पर मल दिया। वह उस पत्ते को उसके शरीर पर तब तक मलता रहा जब तक कि वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

बड़े भाई को यह देख कर आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी। उसने सोचा कि इस पत्ते से तो वह अपने भाई को भी ज़िन्दा कर सकता था और फिर वैसे भी कोशिश करने में क्या हर्ज था।

सो उसने भी वह पत्ता तोड़ा और अपने मरे हुए भाई के सारे शरीर पर मल दिया। कुछ ही देर में वह भी ज़िन्दा हो गया। तुरन्त ही उसने अपनी पत्नी के बारे में पूछा तो उसको अपनी पत्नी की दी गयी चेतावनी याद आ गयी। उसने तुरन्त ही उस कमरे में रखी लाल पोशाक पहनी और उसको दुनियॉ भर में ढूँढने चल दिया।

उसी दिन उस सुन्दरी की शादी राजा से होने वाली थी। राजा के आदमी लाल पोशाक वाले आदमी को ढूँढने में नाकामयाब रहे थे सो सुन्दरी ने उसके मिलने की उम्मीद छोड़ दी थी और सोच लिया था कि शायद वह मर गया होगा इसलिये वह राजा से शादी करने पर तैयार हो गयी थी।

चिचिलो घूमता घूमता उसी शहर में आ गया था जिसमें सुन्दरी की शादी होने वाली थी। इतने दिनों की बेकार की खोज के बाद जब लोगों ने एक पूरे के पूरे लाल पोशाक वाले आदमी देखा तो उन्होंने उसको रोक लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा उसको देख कर जल्दी से यह बात सुन्दरी को बताने गया कि उसको लाल पोशाक वाला आदमी मिल गया है और इस तरह अब उसकी शर्त पूरी हो गयी है और अब उनकी शादी में कोई अड़चन नहीं है।

यह सुन कर सुन्दरी बोली कि पहले वह उस लाल पोशाक वाले आदमी से खुद बात करेगी। उस लाल पोशाक वाले आदमी एक बन्द कमरे में अकेला लाया गया। वहॉ उन दोनों ने अपनी अपनी बदकिस्मती की कहानी कहते हुए और आगे का प्लान बनाते हुए सारी रात गुजार दी।

सुन्दरी के पास महल की सारी चाभियॉ थीं। रात को जब राजा गहरी नींद सो गया तो वे दोनों उठे, दो गधों पर पैसों के थैले लादे और महल से भाग लिये।

सारा दिन चलते चलते जब अँधेरा हो आया तो उनको एक घुड़साल मिली। उन्होंने वहीं भूसे का एक जितना मुलायम और आरामदेह बिस्तर बन सकता था बनाया और लेट गये।

उस घुड़साल की छत पर एक शराबी खर्राटे मार कर सो रहा था और बार बार करवटें बदल रहा था। करवटें बदलते समय एक दफा वह ऊपर से नीचे गिर पड़ा और उन दोनों पति पत्नी के बीच में आ गिरा। गिर कर वह उस भूसे में नीचे को धॅस गया। पर फिर भी वह न तो जागा और ना ही उसने खर्राटे मारना छोड़ा।

सुबह को सुन्दरी सबसे पहले जागी। फिर उसने अपने पति को जगाया — "चिचिलो जागो, हमको देर हो रही है। हमको अपने पैसों वाले गधे पर चढ़ कर यहॉ से जल्दी ही निकल जाना चाहिये।

पर उसका पति अभी भी बहुत गहरी नींद सो रहा था सो उसने तो सुना ही नहीं। पर उस शराबी के कानों में पैसों का नाम पड़ा तो उसने तुरन्त ही जवाब दिया — "हॉ हॉ चलो चलो, हमको चल देना चाहिये।"

सुन्दरी ने उसकी आवाज नहीं पहचानी। अभी दिन नहीं निकला था और अँधेरा ही था इसलिये वह उस आदमी को भी नहीं पहचान सकी और दोनों गधों की तरफ चल दिये और फिर गधों पर सवार हो कर अपने रास्ते चल दिये।

जब दिन निकल आया तब सुन्दरी ने देखा कि उसके साथ जाने वाला आदमी तो उसका पति नहीं था वह तो कोई और था। उसने उससे लड़ना शुरू कर दिया।

अब उस शराबी के पास एक ही रास्ता था। वह बढ़ा और उसने सुन्दरी को धक्का दे कर गधे से नीचे गिरा दिया। उसने सुन्दरी को तो वहीं रोते धोते छोड़ा और पैसे और दोनों गधों को ले कर वहॉ से चलता बना।

अब सुन्दरी को फिर पता नहीं था कि वह अपने पति को कैसे ढूँढे क्योंकि वह तो उस शराबी के साथ बहुत दूर तक निकल आयी थी और वह शराबी उनके दोनों गधे ले कर चला गया था।

सो उसको पैदल ही वापस जाना पड़ा। चलते चलते वह एक भूसे के ढेर के पास आयी जहॉ उसको खेत में काम करने वाला एक लड़का मिल गया। उसने उससे बहुत प्रार्थना की कि वह उसको अपने कपड़े दे दे।

उस लड़के ने उसको अपने कपड़े दे दिये। सुन्दरी उन कपड़ों को पहन कर आदमी के वेश में अब आगे चलने लगी। इस तरह वेश बदलने से उसको अब खतरा कम था।

उसके पति का अभी तक कोई पता नहीं था। अपने खाने पीने के लिये उसने एक आटा पीसने वाले की दूकान पर नौकरी कर ली थी। यह आटा पीसने वाला राजा के नोटरी[27] का आटा पीसता था।

सुन्दरी का काम इस आटा पीसने वाले का हिसाब किताब रखना था। उसकी लिखाई इतनी सुन्दर और साफ थी कि उस आटा पीसने वाले ने इतनी सुन्दर और साफ लिखाई इससे पहले कभी किसी की नहीं देखी थी।

नोटरी को जब इस बात का पता चला कि उसके आटा पीसने वाले के यहॉ एक लड़का काम करता है जिसकी लिखाई बहुत सुन्दर

[27] A notary public of the common law is a public officer constituted by law to serve the public in non-contentious matters usually concerned with estates, deeds, powers-of-attorney, and foreign and international business. A notary's main functions are to administer oaths and affirmations, take affidavits and statutory declarations, witness and authenticate the execution of certain classes of documents, take acknowledgments of deeds and other conveyances, protest notes and bills of exchange, provide notice of foreign drafts, prepare marine or ship's protests in cases of damage, provide exemplifications and notarial copies, and perform certain other official acts depending on the jurisdiction.

और साफ है तो उसने उसको अपने यहॉ नौकर रख लिया सो अब वह नोटरी का हिसाब किताब रखने लगी।

जब नोटरी ने अपने हिसाब की किताब राजा को दिखायी तो राजा भी उसकी लिखाई से बहुत प्रभावित हुआ और उसने उस लड़के को अपनी सेवा में रख लिया।

इस बीच वह राजा जो सुन्दरी से शादी करना चाहता था मर गया। क्योंकि अगली सुबह जब उसने देखा कि उसकी होने वाली दुलहिन उस लाल पोशाक वाले के साथ भाग गयी है तो उसने दीवार से अपना सिर मार मार कर आत्महत्या कर ली।

अब उसके राज्य का वारिस कौन बने? वह राजा जिसने उस खेत वाले लड़के को अपने पास रखा था उसके राज्य का राजा बन गया।

सो उसने उस लड़के को उस मरे हुए राजा के राज्य में गवर्नर बना कर भेजा और उससे कहा कि वह वहॉ जा कर घोषणा करवा दे कि वह नये राजा की जगह उस राज्य के राजा का काम करेगा।

खेत वाले लड़के ने कहा कि अगर उसको वहॉ राज्य करना है तो उसको वहॉ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के पूरे अधिकार दिये जायें।

वह राजा उसकी बात मान गया और उसने उसको वहॉ के राज्य के हर आदमी पर राज करने के उसको पूरे अधिकार दे दिये।

मरे हुए राजा के राज्य में आने पर सबसे पहला काम तो उसने यह किया कि उसने यह खबर सारे राज्य में फैला दी कि वहॉ का हर आदमी जिसके साथ कोई भी असाधारण घटना हुई हो वह उसके सामने आये, अपनी वह असाधारण घटना सुनाये और वह उसको पैसों का एक थैला देगा।

यह खबर फैली तो पहला आदमी जो उसके सामने अपनी असाधारण कहानी सुनाने आया वह थी वह बुढ़िया जिसने उसके पति को मारा था और उसकी पत्नी, यानी उसको खुद को बेहोश करके उठा कर ले गयी थी।

गवर्नर बोला — "ओ नीच, तूने यहॉ आ कर यह सब कहने की मुझसे हिम्मत कैसे की?" और उसने उसको उबलते पानी के कड़ाह में डाल देने का हुकुम सुना दिया।

उसके बाद आया वह शराबी जो उसको और उसके गधों को पैसों के साथ चुरा कर भाग गया था। उसको भी वह बोला — "ओ चोर, तूने एक औरत को लूटा और फिर यह बात बताने के लिये यहॉ भी चला आया?" सो उसने उसको एक खतरनाक चोर कहते हुए फॉसी की सजा सुना दी।

इन दोनों से निपटने के बाद आया उसका अपना पति अपनी कहानी सुनाने। उन दोनों ने एक दूसरे को आपस में देखते ही पहचान लिया और एक दूसरे के गले लग गये।

वह गवर्नर अन्दर गया और अपने कपड़े बदल कर आया। अब वह अपनी सात हिस्सों वाली फ्राक पहने थी और उसका पूरा शरीर गुलाब के फूल की तरह खिला हुआ था। उन लोगों ने फिर बहुत बढ़िया खाना खाया।

चिचिलो ने अपने बड़े भाई को भी वहीं रहने के लिये बुला लिया और उन सातों स्त्रियों को भी। चिचिलो वहॉ का राजा बन गया।

यह सब उसके पिता के आशीर्वाद का नतीजा था कि वह राजा बन गया था।

4 कप्तान और जनरल[28]

घास से जिन्दगी पाने की यह लोक कथा भी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि इटली देश के सिसिली टापू पर एक राजा रहता था जिसके एक ही बेटा था। इस राजकुमार की शादी राजकुमारी टैरैसीना से हुई थी।

जब उनकी शादी का जश्न खत्म हो गया तो राजकुमार एक कमरे में बहुत दुखी और चिन्ता में बैठ गया। उसकी पत्नी ने पूछा — "क्या बात है आप इतने दुखी और चिन्तित क्यों हैं?"

राजकुमार बोला — "प्रिय टैरैसीना, मैं सोच रहा था कि हम लोगों को एक कसम खानी चाहिये कि हममें से जो कोई भी पहले मरे दूसरा उसको उसकी कब्र में तीन दिन और तीन रात तक उसे जगाये।"

टैरैसीना बोली — "अरे बस इतनी सी बात है जो आपको परेशान कर रही है?" उसने तुरन्त राजकुमार की तलवार उठायी और दोनों ने उसकी मूठ पर बने क्रास को चूम कर यह कसम खायी।

[28] The Captain and the General (Story No 179) - a folktale from Italy from its Province of Agrigento. Adapted from the book "Italian Folktales", by Italo Calvino". Translated by George Martin in 1980

एक साल बाद राजकुमारी टैरैसीना बीमार पड़ गयी और मर गयी। राजकुमार ने उसको बड़ी शानो शौकत के साथ दफनाया।

उस रात उसने अपनी तलवार उठायी, दो पिस्तौल लीं और सोने चॉदी के सिक्कों से भरा एक थैला ले कर चर्च चला गया। वहॉ उसने चर्च के रखवाले को कहा कि वह उसको राजकुमारी की कब्र में उतार दे।

उसने चर्च के रखवाले से यह भी कहा — "आज से तीन दिन बाद तुम यहॉ आना और कब्र में से कोई आवाज सुनना। अगर मैं खटखटाऊॅ तो तुम कब्र खोल देना और अगर रात होने तक मैं न खटखटाऊॅ तो समझ लेना कि मैं फिर कभी वापस नहीं आऊॅगा।"

फिर उसने उस चर्च के रखवाले को उसके इस काम के लिये सौ क्राउन[29] दिये और कब्र में अन्दर चला गया। चर्च के रखवाले ने कब्र ऊपर से बन्द कर दी।

जब वह कब्र में बन्द हो गया तो उसने ताबूत खोला तो अपनी पत्नी की लाश देख कर रो पड़ा। वह वहॉ रात भर रोता रहा। इस तरह उसकी पहली रात वहॉ गुजरी।

दूसरी रात को उसे उस कब्र के पीछे की तरफ एक सॉप के फुंकार मारने की आवाज सुनायी दी और एक बड़ा और भयानक सॉप वहॉ निकल आया। उसके पीछे उसके कुछ बच्चे सॉप भी थे।

[29] The then currency in Italy.

उस सॉप ने मुँह खोल कर उसकी पत्नी को काटने की कोशिश की पर राजकुमार ने अपनी पिस्तौल उसकी तरफ करके उसके ऊपर गोली चला दी।

पिस्तौल की गोली से बड़ा सॉप तो मर गया पर उसकी गोली चलने की आवाज सुन कर बच्चे सॉप भाग गये। राजकुमार बड़े मरे हुए सॉप के साथ वहीं कब्र में ही रहा।

कुछ देर में ही वे बच्चे सॉप अपने अपने मुँहों में कुछ घास की पत्तियॉ ले कर वापस आ गये। वे सब उस मरे हुए सॉप को चारों तरफ से घेर कर उसके घावों पर वह घास की पत्तियॉ फेरने लगे। उन्होंने घास की कुछ पत्तियॉ उसके मुँह में रखीं, कुछ उसकी ऑखों पर रखीं और कुछ उसके शरीर पर मलीं।

कुछ ही पल में उस मरे हुए सॉप ने ऑखें खोल दीं। वह कुछ हिला डुला और फिर से वैसा ही हो गया जैसा मरने से पहले था। वह तो एक बार फिर से जी गया था। ज़िन्दा हो कर वह सॉप और उसके बच्चे वहॉ से भाग गये।

अपनी लायी हुई घास वे बच्चे वहीं छोड़ गये थे। राजकुमार ने तुरन्त ही वह घास उठा ली और उसने भी उसमें से कुछ घास अपनी पत्नी के मुँह में रखी और कुछ उसके शरीर पर बिखेर दी।

लो उसकी तो सॉस वापस आने लगी। उसके चेहरे का रंग भी वापस आ गया। वह उठ बैठी और बोली — "ओह, मैं इतनी देर तक कैसे सोती रही।"

खुशी के मारे राजकुमार ने उसको गले लगा लिया और फिर तुरन्त ही उन्होंने उस छेद को ढूँढना शुरू किया जिसमें वे सॉप गायब हो गये थे। वह छेद इतना बड़ा था कि वे दोनों उसके अन्दर जा सकते थे सो दोनों उस छेद के अन्दर घुस गये।

दूसरी तरफ वे उस सॉप घास वाले मैदान में निकल आये जिसमें वे सॉप गायब हुए थे। राजकुमार ने उस मैदान में से बहुत सारी घास तोड़ ली और उसको ले कर वे दोनों घर वापस आ गये। फिर वे पेरिस[30] चले गये और वहॉ नदी के किनारे एक महल किराये पर ले कर रहने लगे।

कुछ समय बाद राजकुमार ने एक सौदागर बनने का निश्चय किया। उसने अपनी पत्नी को एक अच्छे आचार विचार वाली स्त्री के पास छोड़ा जो उसकी उसके घर के कामों में सहायता कर सके। फिर उसने एक जहाज़ खरीदा और व्यापार के लिये चल दिया।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि वह एक महीने में लौट आयेगा और अपने आने की सूचना देने के लिये जब भी उसको वह जहाज़ दिखायी देगा तो वह तीन खाली तोप छोड़ देगा।

जैसे ही राजकुमार वहॉ से गया नैपिल्स[31] की सेना का एक कप्तान सड़क पर जा रहा था कि उसने टैरैसीना को खिड़की पर

[30] Paris is the capital of France, a European country.

[31] Naples is a historical port city on the South-western coast of Italy

खड़े देखा। उसने टैरैसीना से बात करनी चाही पर टैरैसीना वहाँ से चली गयी।

यह देख कर कप्तान ने एक बुढ़िया को बुलाया और उससे कहा — "मैम, अगर आप मुझे उस प्यारी सी लड़की से मिलवा दें जो इस महल में रहती है तो मैं आपको दो सौ क्राउन[32] दूँगा।"

वह बुढ़िया टैरैसीना के महल में गयी और उससे सहायता माँगी कि कुछ लोग उसका सामान छीनना चाहते थे।

उसने कहा — "मेरे पास सामान से भरी एक आलमारी है और वे उसको ले लेना चाहते हैं। क्या आप मेरे ऊपर इतनी दया करेंगी कि आप उसको अपने पास रख लें?"

टैरैसीना राजी हो गयी। बुढ़िया तीन आलमारियाँ उसके पास ले आयी और टैरैसीना ने उनको अपने महल में रख लिया।

रात को उन आलमारियों में से एक आलमारी में से कप्तान निकला, टैरैसीना को पकड़ा और अपने जहाज़ पर ले गया। वे नैपिल्स चले गये जहाँ टैरैसीना अपने पति को भूल कर कप्तान के साथ उसकी पत्नी की तरह से रहने लगी।

एक महीने बाद राजकुमार का जहाज़ नदी में वापस आया तो उसने अपने आने की खबर देने के लिये तीन खाली तोपें चलायीं। पर उसको अपने महल के छज्जे पर अपनी पत्नी दिखायी नहीं दी।

[32] The then currency of Italy.

उसका घर भी खाली पड़ा था और वहॉ उसका कोई निशान भी नहीं था।

राजकुमार ने अपना सब कुछ बेच दिया और दुनियॉ भर में घूमता फिरा। आखीर में वह नैपिल्स आया और वहॉ एक सिपाही की नौकरी करने लगा।

एक दिन वहॉ के राजा ने सेना की एक बहुत ही शानदार परेड का इन्तजाम किया जिसमें सब सिपाहियों को हिस्सा लेना था। उसी में वह कप्तान भी अपनी पत्नी साथ चल रहा था जो टैरैसीना को ले कर आया था।

सिपाही बने राजकुमार ने टैरैसीना को पहचान लिया और टैरैसीना ने सिपाही बने राजकुमार को पहचान लिया। टैरैसीना ने कप्तान से कहा — "देखो, उन सिपाहियों में वह मेरे पति हैं। अब मैं क्या करूँ।"

कप्तान ने उस सिपाही की तरफ इशारा करते हुए अपनी पत्नी से कहा — "हॉ यह सिपाही मेरे साथ था और अभी अभी उसकी तरक्की हुई है।"

कप्तान ने उसको और कई और लोगों को अपने घर खाने के लिये बुलाया जिसमें टैरैसीना नहीं आयी। जब वे खाना खा रहे थे तो कप्तान ने एक चॉदी का चाकू और कॉटा राजकुमार की जेब में रख दिया।

कुछ देर बाद एक चाकू और कॉटा कम पाया गया तो उसकी खोज शुरू हुई। खोज करने पर वह उस सिपाही की जेब में पाया गया। उसका कोर्ट मार्शल हो गया और उसको बन्दूक से गोली मार कर मारने की सजा सुना दी गयी।

जो सिपाही उसको मारने वाले थे उनमें से एक सिपाही उसका दोस्त था। उसने अपने उस दोस्त को थोड़ी सी घास दी और कहा — जब तुम मुझ पर गोली चलाओ तो बहुत सारा धुँआ बनाने की कोशिश करना। जब दूसरे सिपाही अपने कन्धे पर बन्दूक रख कर जा रहे हों तो तुम यह थोड़ी सी घास मेरे मुँह में और मेरे घावों पर रख देना और मुझे छोड़ कर चले जाना।"

समय पर उस पर गोली चलायी गयी। उसके दोस्त ने काफी सारा धुँआ छोड़ा और उस धुँए की आड़ में उसने अपने दोस्त सिपाही के मुँह में और घावों पर थोड़ी थोड़ी घास रख दी। कुछ ही देर में राजकुमार ज़िन्दा हो गया और वहाँ से उठ कर भाग गया।

इधर नैपिल्स के राजा की बेटी कुछ दिनों से इतनी बीमार थी कि बस मरने वाली थी। कोई भी डाक्टर उसके लिये कुछ भी नहीं कर पा रहा था।

राजा ने अपने पूरे राज्य में यह घोषणा करवा दी थी कि "जो कोई भी मेरी बेटी को ठीक करेगा अगर वह कुआँरा होगा तो मैं अपनी बेटी की शादी उससे कर दूँगा और अगर वह शादीशुदा होगा तो फिर मैं उसको राजकुमार बना दूँगा।"

यह घोषणा सुन कर राजकुमार ने एक डाक्टर का वेश रखा, अपनी थोड़ी सी घास उठायी और शाही महल चल दिया। वहाँ उसने एक बहुत बड़ा कमरा जिसमें बहुत सारे डाक्टर बैठे थे पार किया और राजा की बीमार बेटी के पास पहुँच गया। तभी तभी उसने अपने आखिरी साँस ली थी।

राजकुमार ने राजा से कहा — "मैजेस्टी, आपकी बेटी तो अब मर ही गयी है पर मेरे पास इसको जिलाने का अभी भी एक तरीका है अगर आप मुझे इसके साथ अकेला छोड़ दें तो।"

उसको वहाँ अकेला छोड़ दिया गया। उसने थोड़ी सी घास उस राजकुमारी के मुँह और नाक में रखी तो उसने फिर से साँस लेना शुरू कर दिया और कुछ ही पल में वह बिल्कुल ठीक हो गयी।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और बोला — "डाक्टर अब तुम मेरे दामाद[33] हो।"

राजकुमार बोला — "मुझे अफसोस है राजा साहब कि मैं आपका दामाद नहीं बन सकता मैं पहले से ही शादीशुदा हूँ।"

"तो फिर तुम्हें क्या चाहिये?"

"मैं आपकी सारी सेना का जनरल कमान्डर बनना चाहता हूँ।"

"ठीक है।" और राजा ने दो शानदार मौके मनाने का हुकुम दे दिया। पहला तो अपनी बेटी के ज़िन्दा होने का और दूसरा नये जनरल की नियुक्ति का।

[33] Translated for the word "Son-in-Law".

इस मौके पर उसने अपने सब कप्तानों को बुलाया तो वह कप्तान भी आया जिसने उस राजकुमार की पत्नी को भगा लिया था। जनरल भी सोने के चाकू और कॉटा कप्तान की जेब में रखना नहीं भूला और इस चोरी की वजह से कप्तान को जेल में डाल दिया गया।

जनरल उस कप्तान से पूछने गया — "तुम अकेले हो या शादीशुदा?"

कप्तान बोला — "जनरल साहब, अगर मैं सच कहूँ तो मैं शादीशुदा नहीं हूँ।"

"फिर वह स्त्री कौन है जो उस दिन तुम्हारे साथ थी?"

उसी पल दो सिपाही उस स्त्री को भी हथकड़ी पहना कर वहाँ ले आये जो उस कप्तान के साथ रह रही थी। वह आते ही चिल्लायी — "नहीं नहीं इस कप्तान ने तो मुझे मेरे महल से भगा लिया था। मैं तो आपको कभी भूली ही नहीं थी।"

पर उसकी ये सब बातें बेकार गयीं। जनरल ने उन दोनों को कीचड़ में लपेटने और फिर जला कर मार डालने का हुकुम दे दिया। कई बार अदालत में पेश होने के बाद वह पूरी सेना का जनरल कमान्डर घोषित कर दिया गया।

5 दो खच्चर हॉकने वाले[34]

एक बार दो खच्चर[35] हॉकने वाले थे जो आपस में बहुत अच्छे दोस्त थे। उनमें से एक का भगवान में पूरा विश्वास था जबकि दूसरा शैतान[36] में विश्वास करता था।

एक दिन वे दोनों यात्रा कर रहे थे तो एक ने दूसरे से कहा — "वह शैतान ही है जो हमारी सहायता करता है।"

दूसरा बोला — "नहीं जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसी की सहायता करता है।"

वे दोनों इस बात पर आपस में काफी देर तक बहस करते रहे पर अन्त में शैतान में विश्वास रखने वाले ने कहा — "चलो, अच्छा एक एक खच्चर की शर्त लगाते हैं।"

उसी समय काले कपड़े पहने एक नाइट[37] वहॉ से गुजरा। वह इन कपड़ों में शैतान था। उन दोनों दोस्तों ने उससे पूछा कि उन दोनों में से कौन ठीक

[34] The Two Muleteers (Story No 184) – a folktale from Italy from its Ragusa area.
Adapted from the book "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". San Diego, Harcourt Brace Jovanovich, Publishers. 1980. 763 p.

[35] Translated for the word "Mule". Mule is a donkey-like animal.

[36] Satan or Devil

[37] A knight is a person granted an honorary title of *knighthood* by a monarch or other political leader for service to the Monarch or country, especially in a military capacity. See his picture above.

था। तो वह नाइट बोला — "वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।"

शैतान में विश्वास रखने वाला आदमी बोला — "देखा न मैंने क्या कहा था।"

और उसने अपने दोस्त से उसका खच्चर ले लिया पर उसका दोस्त अभी भी इस बात को मानने के लिये तैयार नहीं था कि शैतान ही सहायता करता है सो उन दोनों ने दोबारा शर्त लगायी और दोबारा किसी और से पूछने के लिये कहा।

इस बार उन्होंने एक ऐसे नाइट को अपना जज बनाया जो सफेद कपड़े पहने था। और क्योंकि वह भी शैतान ही था इसलिये उसने भी यही कहा कि वह शैतान ही है जो तुम्हारी सहायता करता है।

इस तरह भगवान में विश्वास रखने वाले आदमी के पास से वह खच्चर भी जाता रहा और आखिर जो आदमी भगवान में विश्वास रखता था उसके हाथ से उसके सारे खच्चर निकल गये।

फिर भी भगवान में विश्वास रखने वाले ने हार नहीं मानी। वह बोला — "मेरा अभी भी यही विश्वास है कि मैं ठीक हूँ और इस बात पर मैं अपनी आखें तक शर्त पर लगा सकता हूँ।"

उसका दोस्त बोला — "ठीक है। तब हम एक और शर्त लगाते है। उस शर्त को अगर तुम जीत गये तो तुमको तुम्हारे सारे

खच्चर वापस मिल जायेंगे और अगर मैं जीत गया तो तुम मुझे अपनी ऑखें दे दोगे।"

"ठीक है।"

तभी एक नाइट हरे रंग की पोशाक में उधर से गुजरा तो उन्होंने उससे पूछा कि कौन ठीक था। नाइट बोला — "यह बताना तो बहुत ही आसान है। जो तुमको सहायता करता है वह शैतान ही है।" और वह अपने घोड़े पर चढ़ता हुआ वहॉ से दौड़ गया।

इस तरह जो आदमी शैतान में विश्वास करता था उसने जो आदमी भगवान में विश्वास करता था उसकी ऑखें ले लीं और उसको वहीं उसी देश में अन्धा करके छोड़ कर चला गया।

अब वह अन्धा बेचारा इधर उधर घूमता रहा घूमता रहा। घूमते घूमते उसको एक गुफा मिल गयी। वह अपनी रात बिताने के लिये उस गुफा में घुस गया। उस गुफा में बहुत सारी झाड़ियॉ उगी हुई थीं। वह वहीं एक तरफ को आराम करने के लिये लेट गया।

अभी वह लेटा ही था कि उसने कई लोगों के उस गुफा में घुसने की आवाज सुनी। असल में उस दिन उस गुफा में सारे शैतानों की एक मीटिंग थी। इन शैतानों के सरदार ने हर एक से एक एक करके यह सवाल किया कि उन्होंने पिछले दिनों में क्या हासिल किया।

उनमें से एक शैतान ने कहा कि वह वेश बदल कर गया और एक बेचारे को अपने सारे खच्चरों से ही नहीं बल्कि अपनी ऑखें खोने पर भी मजबूर कर दिया।

शैतान का सरदार बोला — "बहुत अच्छे। उसकी ऑखों की रोशनी अब कभी वापस नहीं आयेगी जब तक कि वह अपनी ऑखों पर इस घास के दो पत्ते न रखे जो यहॉ इस गुफा के मुँह के पास उगते हैं।"

सारे शैतान हॅस पड़े और बोले — "क्या तुम दिखा सकते हो कि वह उस घास के भेद को कैसे ढूँढेगा? वह तो अन्धा है।"

वह बेचारा खच्चर हॉकने वाला तो वहीं छिपा बैठा था। यह सुन कर तो वह खुशी से उछल पड़ा कि उसकी ऑखों की रोशनी इतनी आसानी से वापस आ सकती है।

पर फिर भी वह सॉस रोके वहीं चुपचाप बैठा रहा और इस बात का इन्तजार करता रहा कि कब वे शैतान वहॉ से जायेंगे और कब वह घास तोड़ कर अपनी ऑखों की रोशनी वापस पायेगा। पर वे शैतान तो एक न एक कहानी सुनाते ही रहे।

एक और शैतान बोला — "मैंने एक मछली की हड्डी रूस के राजा की बेटी के गले में फॅसा दी और कोई उसको उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

बावजूद इसके कि राजा ने जो कोई भी उसके गले से वह हड्डी बाहर निकालेगा उसको वह बहुत सारा पैसा देगा कोई उस हड्डी को उसके गले से बाहर नहीं निकाल सका।

और उसकी हड्डी कोई निकाल भी नहीं सकता क्योंकि उनको पता ही नहीं है कि इस काम के लिये उस लड़की के छज्जे पर लगी हुई खट्टे अंगूरों की बेल पर लगे उन अंगूरों का केवल तीन बूँद का रस चाहिये।"

शैतानों के सरदार ने कहा — "धीरे बोलो। पत्थरों की भी ऑखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं।"

सुबह होने से पहले पहले ही वे सब शैतान वहॉ से चले गये। तब वह खच्चर हॉकने वाला झाड़ियों में से निकला और उस घास की तरफ चला जिससे उसकी आखों की रोशनी वापस आ सकती थी।

उसको वहॉ वह घास मिल गयी और उसने उस घास के दो दो पत्ते अपने दोनों ऑखों की खाली जगह पर छुआ लिये। उसकी नजर वापस आ गयी और अब वह देखने लगा था। अपनी नजर वापस आने के बाद वह तुरन्त ही रूस चल दिया।

रूस के राजा के महल में उसकी बेटी के कमरे में बहुत सारे डाक्टर इकट्ठे बैठे थे पर कोई भी कुछ भी नहीं कर पा रहा था। जब लोगों ने एक मैले कुचैले और धूल से भरे खच्चर हॉकने वाले

को उसकी ऑखें ठीक करने के लिये वहॉ आते देखा तो वे सब हॅस पड़े।

पर राजा बोला — "जब इतने सारे लोगों ने कोशिश कर ली और कोई मेरी बेटी को ठीक नहीं कर सका तो इस आदमी को भी एक मौका देने में क्या हर्ज है।"

सबने उसको कमरे में आने दिया। उसने कहा कि उसको कुछ देर के लिये राजकुमारी के कमरे में अकेला छोड़ दिया जाये। उसको राजा की बेटी के साथ अकेला छोडने के लिये सब लोग उस कमरे से बाहर चले गये।

सबके चले जाने के बाद वह राजकुमारी के कमरे के छज्जे पर गया। वहॉ लगी खट्टे अंगूर की बेल से उसने अंगूर तोड़े और उनके रस की एक एक कर के तीन बूँदें उसके गले में डाल दीं। उस रस से उसके गले में फॅसी वह हड्डी गल गयी और राजा की बेटी हॅसती हुई उठ बैठी।

सोचो ज़रा कि राजा को कितनी खुशी हुई होगी। इस बात के लिये तो कोई भी इनाम छोटा था। राजा ने उसको सोने से ढक दिया तो राजा के लोगों ने उसका वह सोना उसके घर तक पहुँचाने में उसकी सहायता की।

उधर जब यह खच्चर हॉकने वाला बहुत दिनों तक घर नहीं आया तो उसकी पत्नी ने सोचा कि लगता है कि वह मर गया पर

जब उसने उसको ज़िन्दा घर वापस आते देखा तो उसको लगा कि उसके पति का भूत आ गया है।

पर बाद में उसके पति ने अपनी पत्नी को अपनी पूरी कहानी सुनायी और उसको अपना खजाना भी दिखाया। उस पैसे से उसने एक बहुत बड़ा महल बनवाया और वे सब वहाँ आराम से रहने लगे।

उसका दोस्त भी उससे मिलने आया और वहाँ उसकी आँखों की रोशनी वापस आयी देख और उसको इतनी दौलत में खेलते देख उसने पूछा — "दोस्त, यह सब तुमने कैसे किया?"

उसके दोस्त ने अपनी सारी कहानी सुना दी और कहा — "मैंने तुमसे कहा नहीं था कि जो भगवान में विश्वास करता है भगवान उसकी सहायता करता है।"

उसके दोस्त ने अपने मन में सोचा — "आज मैं भी उस गुफा में जाऊँगा और देखूँगा कि मैं भी अमीर हो सकता हूँ क्या?"

सो उस रात वह भी उसी गुफा में जा कर छिप गया। और दिनों की तरह से उस रात को भी शैतान वहाँ पर अपनी मीटिंग करने के लिये आये।

जिन शैतानों ने उसके दोस्त की आखें ली थीं और रूस के राजा की बेटी के मुँह में मछली की हड्डी फँसायी थी उन्हीं शैतानों ने फिर अपने सरदार को बताया कि बड़ी अजीब सी बात है कि उस

आदमी की ऑखों की रोशनी भी वापस आ गयी और रूस के राजा की बेटी भी ठीक हो गयी।

शैतानों का सरदार बोला — "मैंने तुमसे कहा था न कि पत्थरों की भी ऑखें होती हैं और झाड़ियों के भी कान होते हैं। ऐसा लगता है कि उस दिन कोई इस गुफा में था जो हमारी बातें सुन रहा था। जल्दी करो इस गुफा में आग लगा दो।"

सो सबने मिल कर वहॉ उगी सारी झाड़ियों में आग लगा दी। झाड़ियों के साथ साथ वहॉ बैठा वह आदमी भी जल कर मर गया। उसको शैतान पर विश्वास करने का फल मिल गया था।

6 एक राजा और सेब[38]

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर बिल्कुल ही नहीं था एक राजा रहा करता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी मौत का समय पास आ गया था।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "लो बेटा यह सन्दूकची तुम अपने पास रखो। जिस दिन तुम शिकार के लिये पूर्व की तरफ जाओ और बहुत परेशानी में हो तब इसे खोलना।"

यह कह कर राजा मर गया। उसको जिस तरह वह चाहता था उसी तरह से दफ़ना दिया गया। पिता की मौत के बाद राजकुमार बहुत दुखी हो गया और इतना दुखी हो गया कि उसने घर से बाहर ही निकलना बन्द कर दिया।

आखिर राज्य के मन्त्री लोग अपने नये राजा के पास आये और उसको सलाह दी कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये ऐसे घर में बैठे रहने से कैसे काम चलेगा।

राजा को यह विचार अच्छा लगा और वह शिकार के लिये चल दिया। वे लोग पूर्व की तरफ गये और उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे।

---

[38] The King and the Apple (Tale No 16) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

जब वे लोग लौट रहे थे तो नौजवान राजा ने सड़क के पास एक मीनार देखी। उसको देख कर उसने यह इच्छा प्रगट की कि वह उसमें जा कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने एक मन्त्री से कहा कि वह उसके अन्दर जाये और जा कर देखे कि उसके अन्दर क्या है। उसने राजा का हुकुम माना पर कहा — "मुझे लगता है कि मैं इसमें से तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा और अगर मैं न आऊँ तो समझियेगा कि मैं मर गया।"

तीन दिन बीत गये। मन्त्री नहीं लौटा। राजा ने दूसरा मन्त्री भेजा फिर तीसरा मन्त्री भेजा फिर चौथा मन्त्री भेजा पर चारों में से कोई भी मन्त्री वापस लौट कर नहीं आया। तब वह खुद उठा और उसमें अन्दर जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि दरवाजे के ऊपर लिखा था "तुम घुसोगे तो तुम पछताओगे। और नहीं घुसोगे तो तुम पछताओगे।"

राजा ने सोचा "तो मुझे कुछ न कुछ तो करना ही है। मैं घुसूँ या फिर न घुसूँ। मैं घुस कर भी पछताऊँगा और बिना घुसे भी। तो फिर मैं घुस कर ही क्यों न पछताऊँ।" उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर घुस गया।

लो वहाँ तो बारह आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसको बारह कमरों में से निकाल कर ले गये।

जब वह बारहवें कमरे में आया तो उसने वहॉ एक सोने का काउच देखा जिस पर एक आठ नौ साल की उम्र का लड़का लेटा हुआ था। उसकी ऑखें बन्द थीं और वह एक शब्द भी नहीं बोला।

राजा को बताया गया कि वह उससे तीन सवाल पूछ सकता था। पर अगर वह उन सवालों को नहीं समझता और सब सवालों के जवाब नहीं देता तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।

यह सुन कर तो राजा बहुत दुखी हो गया कि वह अब क्या करे। पर फिर उसको अपने पिता की दी हुई सन्दूकची का ध्यान आया। उसने सोचा "इससे ज़्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी कि मुझे मरना पड़ रहा है।"

सो उसने सन्दूकची निकाली और उसे खोला। खोलते ही उसमें से एक सेब निकल कर नीचे गिर पड़ा। गिर कर वह काउच की तरफ लुढ़क गया। राजा ने सोचा "यह मेरी क्या सहायता करेगा।"

वह यह सोच ही रहा था कि सेब बोलने लगा। उसने लड़के को नीचे लिखी हुई कहानी सुनायी —

"एक आदमी अपनी पत्नी और भाई के साथ यात्रा कर रहा था। चलते चलते उनको रात हो गयी। उनके पास खाना भी नहीं था। सो भाई पास के गॉव में डबल रोटी खरीदने गया। रास्ते में उसको डाकू मिल गये जिन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर काट दिया।

जब आदमी ने देखा कि उसका भाई लौट कर नहीं आया तो वह उसको देखने गया। उसका भी वही हाल हुआ जो उसके भाई का हुआ था। अगले दिन वह दुखी स्त्री उनको देखने गयी। बीच रास्ते में उसने अपने पति और उसके भाई की लाशें पड़ी देखीं जिनका सिर नहीं था।

पास में ही उनके सिर पड़े थे। उनके चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। वह स्त्री बेचारी वहीं बैठ गयी। वह अपने बाल नोचने लगी और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

तभी वहॉ एक छोटा सा चूहा आया और उसने खून चाटना शुरू कर दिया। इस पर स्त्री ने एक पत्थर उठाया उसको चूहे पर दे मारा जिससे चूहा मर गया।

अब चूहे की मॉ बाहर आयी और बोली — "मेरी तरफ देख। मैं तो अपने बच्चे को ज़िन्दा कर सकती हूँ पर तू अपने पति और उसके भाई के लिये क्या कर सकती है।" कह कर उसने एक जड़ी बूटी उखाड़ी और उसे चूहे के शरीर पर मल दिया और लो वह चूहा तो ज़िन्दा हो गया। बस फिर वे दोनों अपने बिल में घुस गये।

यह देख कर वह स्त्री तो बहुत खुश हो गयी। उसने भी वही जड़ी बूटी तोड़ी अपने पति और उसके भाई के सिर उनके धड़ से जोड़े और वह जड़ी बूटी उनके ऊपर लगा दी। उसका पति और उसके पति का भाई दोनों ज़िन्दा हो गये। पर उससे एक गलती हो गयी। उसने वे सिर गलत शरीरों पर लगा दिये।

अब मेरे नौजवान बेटे तुम यह बताओ कि उस स्त्री का पति कौन सा था।" कह कर सेब ने अपनी कहानी खत्म की।

लड़के ने अपनी ऑखें खोलीं और कहा — "निश्चित रूप से वही जिसके शरीर पर ठीक सिर था।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

सेब फिर बोला — "एक बार एक मिलाने वाला एक दरजी और एक पादरी एक साथ कहीं जा रहे थे। चलते चलते उनको जंगल में रात हो गयी सो उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी खाना खाया फिर बोले — "हमको नौकरी दिलवा दीजिये। हममें से हर एक बारी बारी से पहरा देगा और अपने अपने काम में कुछ न कुछ करेगा।"

मिलाने वाले की बारी पहली थी सो उसने एक पेड़ काटा और उसकी लकड़ी से एक आदमी बनाया। फिर वह लेट गया और सो गया। अब दरजी की पहरा देने की बारी आयी। तो उसने एक आदमी की मूर्ति देखी तो उसने अपने कपड़े उतारे और उसको पहना दिये।

दरजी के बाद अब पादरी की पहरा देने की बारी थी। जब उसने एक आदमी कपड़े पहने हुए देखा तो उसने भगवान से प्रार्थना की वह उसमें आत्मा डाल दे। उसने प्रार्थना की और भगवान ने उसकी इच्छा पूरी की।

अब यह बताओ मेरे बच्चे कि उस आदमी को किसने बनाया?"

"जिसने उसमें आत्मा डाली।" लड़के ने जवाब दिया।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने मन में सोचा "ये दो सवाल हो गये।"

सेब फिर बोला — "एक बार एक ज्योतिषी था एक डाक्टर था और एक तेज़ भागने वाला था। ज्योतिषी बोला — "एक जगह एक राजकुमार है जो फलॉ फलॉ बीमारी से बीमार है।"

डाक्टर बोला — "मैं जानता हूँ कि उसका इलाज क्या है।"

तो तेज़ भागने वाला बोला — "मैं उस दवा को वहॉ जल्दी से जल्दी ले जा सकता हूँ।"

सो डाक्टर ने उसके लिये दवा तैयार की और वह तेज़ भागने वाला उस दवा को ले कर वहॉ भाग गया। और राजकुमार ठीक हो गया।

अब यह बताओ कि राजकुमार को किसने ठीक किया – ज्योतिषी ने जिसने राजकुमार के बारे में बताया या फिर डाक्टर ने जिसने दवा तैयार की या फिर उस आदमी ने जो दवा ले कर भाग कर गया।"

लड़का बोला — "जिसने दवा तैयार की।"

जब लड़के ने तीनों के जवाब दे दिये तो सेब फिर से अपनी सन्दूकची में जा कर बैठ गया। और राजा ने वह सन्दूकची अपनी जेब में रख ली।

लड़का उठा उसने राजा को गले लगाया और बोला — "यहाँ बहुत लोग आये पर इससे पहले मैं बोल नहीं सका। अब तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है मैं वही पूरी करूँगा।"

राजा ने कहा कि उसके मन्त्री जो मर चुके थे उनको ज़िन्दा कर दिया जाये।

लड़के ने वैसा ही किया। सब लोग वहाँ से बहुत सारी भेंटें ले कर अपने घर वापस गये।

7 लकी चिड़िया[39]

घास से ज़िन्दा करने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक लकड़हारा था। वह बहुत गरीब था। एक दिन काम करते करते उसके पैर थक गये तो वह आराम करने के लिये एक पेड़ के नीचे बैठ गया।

उसी समय एक छोटी सी चिड़िया उसके ऊपर से गुजरी तो उसे लकड़हारे की इस हालत को देख कर उस पर तरस आ गया। उसने सोचा "मुझे इसकी सहायता करनी चाहिये।" और वह लकड़हारे के बराबर में जा कर बैठ गयी।

लकड़हारा थकान से सो गया था सो उस चिड़िया ने वहॉ सोने का एक अंडा दिया और उड़ गयी। लकड़हारे की जब ऑख खुली तो उसको अपने पास एक सोने का अंडा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ।

उसने उसको उठा कर तुरन्त ही अपनी जेब में रख लिया। फिर उसने अपनी लकड़ी का गट्ठर बॉधा जो उस दिन उसने काटी थीं और उस दूकान वाले के पास पहुॅचा जिसको वह अक्सर अपनी

[39] The Lucky Bird – a folktale of Kashmir, India. This story taken from the Web Site : http://www.kidsgen.com/stories/folk_tales/the_lucky_bird.htm

लकड़ी बेचा करता था और उसको चिल्ला कर अपनी लकड़ियों का गट्ठर दिया तो दूकानदार बोला "अरे आज इतनी कम लकड़ियॉ? तुम रोज तो इतनी सारी लकड़ियॉ ले कर आते हो फिर आज क्या हुआ। लगता है कि आज तुमने ज़्यादा काम नहीं किया।"

तब लकड़हारे ने उसे बताया कि कैसे वह उस दिन सो गया था और जब वह सो कर उठा तो कैसे उसको सोने का एक अंडा मिल गया था।

दूकानदार एक बहुत ही चालाक आदमी था उसने उससे कहा कि वह उसको उसे एक सोने के सिक्के में बेच दे। लकड़हारा बहुत सीधा था वह तैयार हो गया।

दूकानदार ने उससे यह भी कहा कि अगर वह उसको वह चिड़िया ला दे जिसने उसको यह सोने का अंडा दिया है तो वह उसके उसको पॉच सोने के सिक्के देगा। लकड़हारे ने उससे वह चिड़िया लाने का वायदा किया और अपने घर चला गया।

अगले दिन वह फिर से उसी पेड़ के पास गया जिसके नीचे उसने वह सोने का अंडा पाया था। वह वहीं उसके नीचे बैठ गया और सोने का बहाना करने लगा।

वह चिड़िया फिर वहॉ आयी और उसके पास बैठ गयी। बस तभी लकड़हारे ने अपनी ऑख खोली और उसे पकड़ लिया। वह बोला — "अब मैं तुम्हें पॉच सोने के सिक्कों में दूकानदार को बेच दूँगा।"

चिड़िया चिल्ला कर बोली — "क्या तुम्हें नहीं मालूम कि एक सोने के अंडे की कीमत उन पॉच सोने के सिक्कों से सैंकड़ों गुना ज़्यादा है। वह दूकानदार तुम्हें बेवकूफ बना रहा है।"

लकड़हारे को अपनी गलती महसूस हुई तो वह बोला — "मुझे बहुत अफसोस है कि लालच में मैंने तुम्हें नुकसान पहुॅचाने की सोचा।"

पर चिड़िया उसी समय नीचे गिर पड़ी और बोली — "मेरा अन्त अब पास है। मैं अच्छी किस्मत लाने वाली चिड़ियों के परिवार से आती हूॅ। हम आदमियों के लिये खुशकिस्मती ले कर आती हैं। पर जब हम लोग किसी आदमी के हाथ लग जाती हैं तो हमको मरना पड़ जाता है।"

लकड़हारे ने जब यह सुना तो वह फूट फूट कर रोने लगा। रोते रोते वह बोला — "क्या मैं तुम्हारे लिये कुछ कर सकता हूॅ?"

चिड़िया बोली — "हॉ तुम एक काम कर सकते हो। जब मैं मर जाऊॅ तो तुम मेरा एक पंख निकाल लेना और उसे आग को दिखा देना तो तुम मेरे घर पहुॅच जाओगे। वहॉ जा कर मेरा वह पंख उनको दे देना और सब कुछ उन्हें सच सच बता देना।"

यह कह कर वह मर गयी। लकड़हारे ने वही किया जो चिड़िया ने उससे करने के लिये कहा था। जैसे ही उसने उसका पंख आग को दिखाया तो वह उस चिड़िया के घर पहुॅच गया।

उसने उनको उसका पंख दिखाया और उनको सारी कहानी बतायी तो चिड़िया का पिता चिड़ा बोला — "हमको जल्दी करनी चाहिये।" कह कर उसने वह पंख जमीन पर रखा और उसके चारों तरफ कूदना शुरू किया।

दस चक्कर काटने के बाद पिता चिड़े ने वह पंख छुआ तो लो मरी हुई चिड़िया का शरीर वहाँ आ गया। उसकी माँ चिड़िया और बहिनें चिड़ियें उसके लिये कुछ हरे पत्ते और घास ले कर आयीं जो ज़िन्दगी देते थे और उनको उसकी चोंच में भर दिया। इससे उसने फिर से ज़िन्दा हो कर आँखें खोल दीं।

लकड़हारा उसको ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ। तब वह लकी चिड़िया बोली — "किस्मत तो आती है जाती है। इसी तरह से लकी चिड़िया भी है। हम लोग लालची आदमियों के पास नहीं ठहरतीं।"

लकड़हारा यह सुन कर रो पड़ा और बोला — "मैंने अपने लालच में आ कर तुम्हें खो दिया था।"

चिड़िया बोली — "इतना दुखी मत हो। तुमने मेरी सहायता की इसलिये मैं फिर से तुम्हारे पास लौटूँगी। पर उसके लिये तुम्हें कुछ समय ठहरना पड़ेगा।" लकड़हारा बेचारा भारी दिल से अपने घर लौट गया पर उसको विश्वास था कि वह लकी चिड़िया एक न एक दिन जरूर उसके पास वापस आयेगी।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शीबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on May 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1200** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
मई **2018**